दैनिक पंचांग
सूर्योदयः 05:23 ए एम
सूर्यास्तः 07:16 पी एम
तिथिः पूर्णिमा - 09:11 ए एम तक
नक्षत्रः ज्येष्ठा - 03:23 ए एम, जून 05 तक
योगः सिद्ध - 11:59 ए एम तक
करणः बव - 09:11 ए एम तक
द्वितीय करणः बालव - 07:57 पी एम तक
पक्षः शुक्ल पक्ष
वारः रविवार

हिन्दी दैनिक
झारखण्ड देखो
खबरें, कहानी, लोग और बहुत कुछ

Digital Edition
www.jharkhanddekho.com • वर्ष 3 • अंक 155 • पृष्ठ 8 • दुमका, रविवार 4 जून 2023 • मूल्य 2 रुपये
Email - Jharkhanddekho@gmail.com | epaper - Jharkhanddekho.com

तीन ट्रेनों की टक्कर में पलटी 17 बोगियां

288 यात्रियों की मौत, 803 घायल

नई दिल्ली/एजेंसी।

ओडिशा के बालासोर जिले में शुक्रवार शाम को हुए एक दर्दनाक रेल हादसे में अब तक 288 से लोगों की मौत की खबर आ चुकी है. वहीं 803 से ज्यादा लोग घायल बताए जा रहे हैं. दरअसल कोरोमंडल एक्सप्रेस के कई डिब्बे पटरी से उतर गए, जिसके बाद यह दूसरी लाइन पर सामने से आ रही एक अन्य ट्रेन से टकरा गई. जिस वजह से ये दर्दनाक हादसा हुआ. ओडिशा रेल हादसे की जांच के आदेश दे दिए गए हैं. साउथ ईस्टर्न जोन के कमिश्नर रेलवे सेफ्टी ए एम चौधरी इस बड़ी ट्रेन दुर्घटना की जांच करेंगे.

पीएम मोदी ने किया घटनास्थल का दौरा

» पीएम मोदी ने शनिवार को घटनास्थल का दौरा किया.पीएम मोदी ने इस दौरान घटनास्थल पर चल रहे राहत–बचाव कार्य का भी जायजा लिया. इसके बाद पीएम कटक के उस अस्पताल भी गए जहां ज्यादातर घायलों का इलाज चल रहा है. पीएम मोदी ने अस्पताल में घायलों से बात भी की. साथ ही घायलों के इलाज में लगे डॉक्टरों से भी बात की.

रेस्क्यू ऑपरेशन अभी भी जारी

रेल हादसे में घायलों को इलाज के लिए गोपालपुर, कांतापाडा, बालासोर, भद्रक और सोरो के अस्पताल में भर्ती कराया गया है. जानकारी के मुताबिक अभी भी राहत एवं बचाव कार्य जारी है. पटरी से उतरे डिब्बों में कई लोग फंस गए और स्थानीय लोग उन्हें बचाने के लिए आपातकालीन सेवा कर्मियों की मदद कर रहे थे, लेकिन अंधेरा होने की वजह से अभियान में दिक्कतें आईं. मुख्य सचिव प्रदीप जेना के मुताबिक 7 NDRF, 5 ODRAF और 24 फायर सर्विस यूनिट, स्थानीय पुलिस, वालिंटियर खोज और बचाव में खूब मशक्कत कर रहे हैं.

पश्चिम बंगाल सीएम ममता बनर्जी ने किया घटनास्थल का दौरा

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने घटनास्थल का दौरा किया. रेल मंत्री के सामने ममता बनर्जी ने कहा कि इस हादसे की गहनता से जांच हो. बंगाल सीएम ने राज्य के प्रत्येक प्रभावित परिवार को 5 लाख की वित्तीय सहायता की घोषणा की. पश्चिम बंगाल सरकार ने ओडिशा में 110 एम्बुलेंस और 40 डॉक्टर भेजे हैं और संबंधित अधिकारियों के साथ सहयोग करना जारी रखेगी.

मुआवजे का ऐलान

इसी के साथ रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने ओडिशा की ट्रेन दुर्घटना को लेकर मुआवजे की घोषणा की है. वैष्णव ने ट्वीट किया है - ओडिशा में हुए इस दुर्भाग्यपूर्ण ट्रेन हादसे में मरने वाले प्रत्येक व्यक्ति के परिवार को 10 लाख रुपये, गंभीर घायलों को दो लाख रुपये और मामूली घायलों को 50,000 रुपये की मदद दी जाएगी. साथ ही पीएम मोदी ने मृतक के परिजनों के लिए दो-दो लाख रुपये और घायलों के लिए 50,000-50,000 रुपये की सहायता राशि देने का ऐलान किया.

जो भी दोषी होगा उसे छोड़ा नहीं जाएगा: पीएम मोदी

नई दिल्ली/एजेंसी।

पीएम मोदी ने आज ओडिशा के कटक में बालासोर में हुए ट्रेन हादसे के घायलों से अस्पताल में मुलाकात की. इसके बाद पीएम मोदी ने कहा, ₹यह एक दर्दनाक घटना है. सरकार घायलों के इलाज के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेगी. यह एक गंभीर घटना है, इसकी हर तरह से जांच के निर्देश जारी किए गए हैं. दोषी पाए जाने वालों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाएगी. रेलवे ट्रैक की बहाली की दिशा में काम कर रहा है. मैंने घायल पीड़ितों से मुलाकात की है.₹

पीएम मोदी प्रेस से बात करते हुए भावुक हो गए. उन्होंने कहा कि, "अनेक राज्यों के नागरिकों ने इस यात्रा में कुछ न कुछ गंवाया है. जिन लोगों ने अपना जीवन खोया है, यह

बहुत बड़ा दर्दनाक और वेदना से भी परे मन को विचलित करने वाला है. जिन परिवार जनों को इंज्युरी हुई है, उनके लिए भी, सरकार उनके उत्तम स्वास्थ्य के लिए सरकार कोई कोर कसर नहीं छोड़ेगी. जो परिजन हमने खोए हैं, वो वापस नहीं लाय पाएंगे, लेकिन सरकार उनके दुख में, परिजनों के दुख में उनके साथ है."

उन्होंने कहा कि, "सरकार के लिए यह घटना अत्यंत गंभीर है. हर प्रकार की जांच के निर्देश दिए गए हैं. जो भी दोषी पाया जाएगा, उसको सख्त से सख्त सजा हो, उसे बख्शा नहीं जाएगा."

पीएम मोदी ने कहा कि, "ओडिशा सरकार, यहां के प्रशासन के सभी अधिकारियों ने इस परिस्थिति में, अपने पास जो भी संसाधन थे, लोगों की मदद करने का प्रयास किया. यहां के नागरिकों का भी हृदय से अभिनंदन करता हूं, उन्होंने इस संकट की घड़ी में, चाहे ब्लड डोनेशन का काम हो, चाहे रेसक्यू ऑपरेशन में मदद की बात हो, जो भी उनसे बन पड़ता था, उन्होंने करने का प्रयास किया. खास तौर पर इस क्षेत्र के युवकों ने रात भर मेहनत की है. मैं इस क्षेत्र के नागरिकों का भी आदरपूर्वक नमन करता हूं. उनके सहयोग के कारण ऑपरशन को तेज गति से आगे बढ़ा पाए."

Dipendra Singh
9335448671

R.K. Choudhary
8384831556

RK marbles & tiles

मार्बल & ग्रेनाइट

राजस्थान वाले

रेलवे स्टेशन के सामने, रिंग रोड, दुमका (झारखंड)

संक्षिप्त समाचार

विश्व साईकिल दिवस पर साइकिल रैली का आयोजन

दुमका/झारखंड देखो। विश्व साईकिल दिवस के अवसर पर एस पी कॉलेज, दुमका की राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में साइकिल रैली का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ के पी यादव के निर्देशानुसार राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ होलिका कुमारी मरांडी, डॉ अमिता हेम्ब्रम की इकाइयों के स्वयंसेवी छात्र छात्राओं ने उत्साह के साथ इस रैली में हिस्सा लिया। प्राचार्य एवं कार्यक्रम पदाधिकारियों का संदेश इस रैली के माध्यम से यह दिया गया कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है और इसके लिए हमें इंधन की बचत करते हुए अपनी साइकिल यात्रा से हम स्वस्थ राह सकते हैं। साइकिलिंग को एक सर्वोत्तम एक्सरसाइज माना जाता है। सरकार के निर्देशानुसार तथा विश्वविद्यालय के निर्देश पर इस रैली का आयोजन हुआ। इस अवसर पर महाविद्यालय के कई शिक्षक यथा कार्यक्रम समन्वयक डॉ कुमार सौरभ, डॉ यदुवंश यादव, प्रो अमन राज, डॉ के एस हरी, डॉ अविनाश हांसदा, प्रो बसंती हांसदा आदि शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

मन के मिलन पखवाड़ा का हुआ आयोजन

दुमका/झारखंड देखो। झालसा के निर्देशानुसार व दुमका जिला के प्रधान जिला व सत्र न्यायाधीश अनिल कुमार मिश्रा के निर्देश पर मन के मिलन पखवाड़ा के तहत आज शनिवार को न्याय सदन परिसर में जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया उक्त आशय की जानकारी देते हुए जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव विश्वनाथ भगत ने बताया कि मन का मिलन पखवाड़ा में आकर मध्यस्थता द्वारा अपने लंबित मामले का शीघ्र निष्पादन करा सकते हैं उन्होंने बताया कि इससे समय और पैसे दोनों की बचत होगी। उन्होंने कहा कि पूरे जिले में 14 जून तक मन का मिलन पखवाड़ा के तहत जागरूकता शिविर का आयोजन कर मध्यस्थता कराया जा रहा हैं। इस अवधि में डालसा कार्यालय के फ्रंट ऑफिस, जिले के सभी लीगल एड क्लीनिक में मध्यस्थता के बारे में लोगों को जागरूक करने का कार्य किया जा रहा है, ताकि अधिक से अधिक न्यायालय में लंबित मामलों का निष्पादन किया जा सके। उन्होंने जिला विधिक सेवा प्राधिकार से मिलने वाली सुविधाओं के बारे में जानकारी दी और कहा कि मन का मिलन पखवाड़ा लोगों के लिए बेहद उपयोगी है इसके तहत लोग मध्यस्थता केंद्र में आकर अपने मामले का शीघ्र निष्पादन करा सकते हैं। इस मौके पर डालसा के द्वारा पंपलेट, हैंडविल का भी वितरण किया गया।

बीआरपी सीआरपी की मासिक बैठक आयोजित

दुमका/झारखंड देखो। जामा प्रखंड मुख्यालय स्थित बीआरसी भवन जामा में शनिवार को प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी सुधा कुमारी

के अध्यक्षता में बीआरपी सीआरपी की मासिक बैठक आयोजित की गई। जिसमें चाइल्ड मैंडेटरी,एसडीएमआईएस,किचन गार्डन,ड्रॉप आउट बच्चों की स्थिति एवं ई विद्या वाहिनी में छात्र शिक्षक उपस्थिति की समीक्षा की गई। बीईईओ सुधा कुमारी ने बताया कि चाइल्ड मैंडेटरी में बच्चों की संख्या जिन विद्यालयों में 90% से कम है वह हर हाल में 90% से अधिक दर्ज करना सुनिश्चित करेंगे,तथा ई विद्या वाहिनी ऐप में शिक्षक एवं छात्र की उपस्थिति ऑन लाईन दर्ज कराना सुनिश्चित करेंगे। ग्रीष्म अवकाश के उपरांत विद्यालय खुलने पर इसकी संख्या में और अधिक बढ़ोतरी होनी चाहिए। जामा प्रखंड में 31 ऐसे घेराबंदी वाले विद्यालयों का चयन किया गया है जिसमें किचन गार्डन योजना संचालित की जानी हैयोजना के अन्तर्गत रसोईया विद्यालय की खाली जमीन में किचन गार्डन के रूप में सब्जी की खेती करेंगे। इसके लिए सभी रसोईया का खाता संख्या, आधार कार्ड संख्या और जॉब कार्ड संख्या मांगा गया है।जिसे सीआरपी विद्यालय के सचिव से प्राप्त कर बीआरसी में जमा करेंगे। वैसे रसोईया जिसका जॉब कार्ड नहीं बना है उनका जॉब कार्ड बनाया जाएगा।इस अवसर पर बीपीओ विनोद कुमार,बीआरपी संजीव मिश्रा,बीरेंद्र नारायण अम्बष्ट एवं सभी सीआरपी मौजूद थे।

पत्थर चिप्स लदे ओवरलोडेड वाहनों के परिवहन पर अंकुश लगाने का आदेश बेअसर

दुमका/झारखंड देखो।

उपराजधानी दुमका में पत्थर के अवैध कारोबार पर रोक लगाना असंभव सा प्रतीत होता दिख रहा है।ऐसा हम यूं ही नहीं कह रहे आप किसी भी दिन शिकारीपाड़ा से हंसडीहा तक पत्थर चिप्स लदे ओवरलोडेड वाहनों को आराम से परिवहन करते देख सकते हैं।आएं दिन है रही ऐसी घटनाएं इसका स्पष्ट प्रमाण है।दो दिन पहले रामगढ़ थाना क्षेत्र में अमरपुर के समीप पत्थर चिप्स लदा एक ओवरलोडेड वाहन पलट गया था,उसी दिन गुहियाजोड़ी चेकपोस्ट पर पत्थर चिप्स लदे कुछ वाहनों को जिला प्रशासन द्वारा जब्त किया गया।लेकिन पत्थर माफियाओं पर इसका असर नहीं होता दिख रहा है।उपायुक्त एवं पुलिस अधीक्षक के कड़े निर्देश के बावजूद अवैध खनन एवं परिवहन पर लगाम नहीं लग पा रहा।हाल फिलहाल में उपायुक्त दुमका द्वारा बैठक कर जिले के सभी अंचल अधिकारी एवं थाना प्रभारियों को अवैध परिवहन पर लगाम लगाने का निर्देश दिया गया था परन्तु इसका कोई असर देखने को नहीं मिल रहा है।लगातार बेरोकटोक ओवरलोडेड पत्थर चिप्स का परिवहन जारी है। शनिवार को तकरीबन एक बजे दोपहर में दुमका रामपुरहाट राष्ट्रीय उच्च पथ पर सरसडंगाल की तरफ से क्षमता से अधिक पत्थर चिप्स लादकर एक ट्रक को परिवहन करते देखा गया। यह मात्र एक उदाहरण है ऐसे अनेकों ट्रक दिन रात क्षमता से अधिक पत्थर चिप्स डालकर परिवहन कर रहे हैं, जिस पर थाना प्रभारी एवं अंचल अधिकारी द्वारा किसी प्रकार की कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। इस संबंध में अंचल अधिकारी शिकारीपाड़ा ने बताया कि जांच में एक भी ओवरलोडेड ट्रक नहीं मिल रहा हैं। जबकि कुछ दिनों पहले पत्ताबाड़ी के समीप से शिकारीपाड़ा पुलिस ने एक ओवरलोडेड पत्थर चिप्स लदे ट्रक को जब्त किया था।सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार रात के बारह बजे से सुबह चार बजे तक शिकारीपाड़ा से हंसडीहा होकर सैकड़ों की संख्या में पत्थर चिप्स लदे वाहन बिहार भेजे जा रहे हैं जिसकी जांच होनी चाहिए लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हो रही है।

बगैर परिवहन चालान पत्थर चिप्स परिवहन कर रहा हाईवा जप्त

दुमका/झारखंड देखो। शिकारीपाड़ा के अंचल अधिकारी राजू कमल ने आज शनिवार को बगैर परिवहन चालान पत्थर चिप्स परिवहन कर रहे एक हाईवा को जप्त कर शिकारीपाड़ा थाना को सुपुर्द कर दिया है जो वर्तमान समय में पुलिस अभिरक्षा में शिकारीपाड़ा प्रखंड मैदान में रखा गया है।अंचलाधिकारी के अनुसार दुमका रामपुरहाट राष्ट्रीय उच्च पथ के रामगढ़ में हाईवा को रोककर पत्थर चिप्स से संबंधित चालान की मांग की गयी तो चालक ने कहा कि चालान अभी नहीं है बाद में लाकर दिखा देंगे।चालान नहीं प्रस्तुत करने पर अंचलाधिकारी ने हाईवा को जप्त करते हुए पुलिस के हवाले कर दिया जिसे पुलिस अभिरक्षा में रखा गया है।चालान लाकर दिखाने एवं उसके बाद उसकी जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

दो चार पहिया वाहनों के बीच आमने-सामने की जोरदार टक्कर,दो लोग गंभीर रूप से घायल

दुमका/झारखंड देखो। दुमका रामपुरहाट राष्ट्रीय उच्च पथ पर सिमानीजोर गांव के निकट शनिवार को दो चार पहिया वाहनो के बीच आपस में आमने-सामने की जोरदार टक्कर हो गई है।घटना में ओमनी सवार ड्राइवर सहित दो व्यक्ति घायल हो गए,जिन्हें शिकारीपाड़ा पुलिस ने घटनास्थल से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शिकारीपाड़ा लाया।प्राथमिक इलाज के बाद दोनों घायलों को प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ देवानंद मिश्रा ने रेफर कर दिया। मिली जानकारी के अनुसार शिकारीपाड़ा थाना क्षेत्र के मलूटी गांव निवासी कृष्ण नंदू घोष अपनी निजी ओमनी कार से चालक बुद्धदेव मिर्धा के साथ दुमका की ओर जा रहे थे जब सिमानीजोर पुलिया के निकट पहुंचे तो दुमका की ओर से आ रही स्विफ्ट डिजायर कार ने सामने से आकर जोरदार टक्कर मार दी, जिसमें ओमनी के ड्राइवर बुद्धदेव मिर्धा का एक पैर टूट गया एवं कृष्ण नंदू घोष उर्फ पिंटू घोष भी घायल हो गए।दोनों वाहन क्षतिग्रस्त होने के कारण घटनास्थल पर ही पड़े थे, दोनों वाहनों को शिकारीपाड़ा पुलिस ने जप्त कर लिया है तथा जेसीबी मशीन से पुलिया से हटाकर आवागमन बहाल कर दिया है।

ग्रामीण क्षेत्रों में नागरिकों के सहयोग से स्वच्छता अभियान चलाया

दुमका/झारखंड देखो।

जी-20 जनभागीदारी कार्यक्रम के तहत जन शिक्षण संस्थान विकास भारती दुमका द्वारा उद्यमी नारा लेखन प्रतियोगिता, उद्यमिता क्विज प्रतियोगिता एवं स्वच्छता अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया. जन शिक्षण संस्थान विकास भारती दुमका के प्रभारी निदेशक अन्नू ने कहा कि उद्यमी नारा लेखन प्रतियोगिता के माध्यम से जन शिक्षण संस्थान दुमका युवाओं के कौशल को बढ़ावा देने के साथ-साथ उन्हें अपनी अद्वितीयता और योग्यता के साथ अपने विचारों को दुनिया के साथ साझा करने का अवसर प्रदान करता है.
साथ ही उद्यमिता क्विज प्रतियोगिता के माध्यम से प्रतिभागियों के ज्ञान का महा मुकाबला के साथ उद्यमिता के क्षेत्र में रुचि रखने वाले छात्रों के लिए एक रोचक और ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जहां वे अपने उद्यमिता और व्यवसायिक ज्ञान को परख सके. यह प्रतियोगिता छात्रों को उद्यमिता के गहरी संस्कृति को समझने और इस क्षेत्र में उन्नति के लिए प्रोत्साहित करने का एक प्रयास है.इसी कड़ी में जन शिक्षण संस्थान विकास भारती दुमका द्वारा स्वच्छता अभियान के तहत ग्रामीणों को स्वास्थ्य, सुरक्षा और वातावरण संरक्षण के महत्व को समझाने का प्रयास किया गया. साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में नागरिकों के सहयोग से स्वच्छता अभियान चलाया गया, हाथ की साफ सफाई के बारे में जानकारी दिया गया और साबुन से हाथ धुलवाया गया, प्लास्टिक का उपयोग कम करने के लिए एवं गांव की साफ सफाई के लिए झाड़ू लगवाया गया.लोगों से यह आग्रह किया गया कि वह अपने आसपास के स्थानों की साफ सफाई का ध्यान रखें और स्वच्छता को अपना धर्म मान कर इस अभियान में सक्रिय भागीदारी लें. एक स्वच्छ और स्वस्थ भारत के सपनों को साकार करने के लिए सभी का सहयोग आवश्यक है. इस कार्यक्रम को सफल बनाने में जन शिक्षण संस्थान विकास भारती दुमका के प्रभारी निदेशक अन्नू, कार्यक्रम पदाधिकारी दीपक कुमार सिंह, सहायक कार्यक्रम पदाधिकारी (आजीविक) दर्शन हेंब्रम, अकाउंटेंट प्रदीप कुमार शर्मा, एमआईएस श्रीराम कुशवाहा, मोबिलाइजर आनंद कुमार एवं सविता किस्कू, राजकुमार हेंब्रम, रोहित कुमार केशरी के साथ सैकड़ों किशोरियों एवं महिलाओं ने भाग लिया.

साइकिल का प्रयोग कर पर्यावरण को संतुलित बनाया जा सकता है

दुमका/झारखंड देखो।

विश्व साइकिल दिवस के अवसर पर आदित्य नारायण महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई 4 एवं 5 के नेतृत्व में रसिकपुर से एसपी कॉलेज तक साइकिल रैली निकाली गई।कार्यक्रम का नेतृत्व ए.एन. कॉलेज के एन.एस.एस. यूनिट-4 एवं 5 के कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ प्रमोद कुमार झा एवं प्रो अन्हद लाल, प्रो वीरेंद्र गोराई, शिक्षक सुनील शर्मा कर रहे थे।कार्यक्रम में भाग लेने वालों में- हिमांशु रंजन, मामून रशीद, अमियाद हुसैन, सुनील, मुकेश कुमार साहा, ओम प्रकाश शाह, ईमानवेल पहाड़िया, अभिषेक पहाड़िया, नियाज अंसारी, सोहेब अंसारी, परवेज अंसारी, शाहनवाज अंसारी, सौरभ लाल मंगलेश, पुलकित लाल आदि ने इस कार्यक्रम में भाग लिए।कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए एन.एस.एस. के कार्यक्रम पदाधिकारी प्रोफेसर अन्हद लाल ने बताया कि विश्व साइकिल दिवस से प्रेरणा लेकर साइकिल का प्रयोग कर पर्यावरण को संतुलित बनाया जा सकता है।साइकिल का प्रयोग कर अपने स्वास्थ्य को ठीक रख सकते हैं।अपने खर्चों पर नियंत्रण कर सकते हैं।ऐसे अनेक फायदे साइकिल को बढ़ावा देकर अपना सकते हैं।कार्यक्रम को संबोधित करने वालों में डॉ प्रमोद कुमार झा प्रोफेसर वीरेंद्र गोराई, सुनील कुमार शर्मा ने भी साइकिल दिवस की महत्ता को बताया।

TO-LET
(3600 sq ft)
GROUND FLOOR
7 room late bath attach
SECOND FLOOR
4 room and 1 hall late bath attach
Address-lakhikundi (bridge left side),Dumka
Contact number-7004213289

अवर सचिव ने संस्था जनलोक कल्याण परिषद, पाकुड़ द्वारा संचालित बाल देखभाल संस्थान बाल आश्रयगृह का निरीक्षण किया

(झारखण्ड देखो,प्रतिनिधि)

पाकुड़ः झारखंड राज्य बाल संरक्षण संस्था अवर सचिव अरशद जमाल, प्रोग्राम मैनेजर चौधरी आभास कुमार, प्रोग्राम ऑफिसर शगुफ्ता बानो, झारखंड राज्य बाल संरक्षण संस्था राहुल मेहता, स्टेट कोऑर्डिनेटर एवं वेद प्रकाश तिवारी, जिला बाल संरक्षण पदाधिकारी, रांची द्वारा संयुक्त रूप से संस्था जनलोक कल्याण परिषद,पाकुड़ द्वारा संचालित बाल देखभाल संस्थान बाल आश्रयगृह, पाकुड़ का निरीक्षण किया गया। बाल गृह में पहुंचने पर टीम के सदस्यों को बाल गृह के बच्चों और कर्मियों द्वारा पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया गया। निरीक्षण के दौरान टीम में शामिल पदाधिकारियों द्वारा बाल गृह में आवासित बच्चों और कर्मियों से उपलब्ध आधारभूत संरचना और सुविधाओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई। निरीक्षण के दौरान उपस्थित जिला समाज कल्याण पदाधिकारी, पाकुड़ के द्वारा बाल गृह को सरकार द्वारा प्रदत्त वित्तीय सहायता और आवासित बच्चों को दी जा रही सभी सुविधाओं के संबंध में टीम को अवगत कराया गया। निरीक्षण के दौरान राज्यस्तरीय टीम के द्वारा संस्था के सचिव और बालगृह के अधीक्षक से चिल्ड्रन विथ स्पेशल नीड्स की श्रेणी के बच्चों के उक्त बाल गृह में आवासन और देखभाल की संभावनाओं और उपलब्ध सुविधाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। बाल गृह के अधीक्षक द्वारा अवगत किया गया कि वर्तमान में बाल गृह में उपरोक्त श्रेणी के बच्चों के आवासन और देखभाल के लिए आधारभूत संरचना उपलब्ध है और विभाग द्वारा निर्देश प्राप्त होने पर अन्य सभी जरूरी संसाधन भी शीघ्र ही उपलब्ध करा लिया

जा सकेगा। वर्तमान में जिले में और खास कर संथाल परगना में विशेष देखभाल की आवश्यकता की श्रेणी वाले बच्चों के लिए बाल गृह का संचालन नही हो पाने के कारण काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में यदि उपरोक्त श्रेणी के बच्चों के लिए बाल गृह का संचालन किया जाय तो बाल हित में एक बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती है। इस संबंध में अवर सचिव द्वारा आश्वस्त किया गया कि विभाग के वरीय पदाधिकारियों के साथ आवश्यक विचार-विमर्श के साथ ही स्वीकृति प्राप्त होने की उपरांत उक्त श्रेणी के बच्चों के आवासन और देखभाल के संचालन हेतु आवश्यक दिशा- निर्देश उपलब्ध करा दी जाएगी। निरीक्षण के दौरान टीम में शामिल अन्य पदाधिकारियों द्वारा सभी बच्चों से व्यक्तिगत रूप से बातचीत करते हुवे उनके बाल गृह में रहने की अवधि, पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक स्थिति, परिवार में वापसी की संभावनाओं एवं अन्य जरूरतों के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई। बाल गृह में आवासित बच्चों के लिए उपलब्ध सुविधाओं सहित बच्चों के शारीरिक, शैक्षणिक एवं अन्य प्रगति काफी संतोषजनक बताया गया। साथ ही बाल गृह में आवासित सभी बच्चों के स्वर्णिम भविष्य की कामना की गई एवं संस्था के प्रतिनिधि और बालगृह में कार्यरत सभी कर्मियों को बच्चों के प्रति उनके समर्पण भावना के लिए बधाई देते हुवे बाल हित में और भी तत्परता के साथ कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया गया। राज्यस्तरीय टीम से जिला बाल संरक्षण इकाई के सभी कर्मियों और बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष और सभी सदस्यों ने मुलाकात कर डीसीपीयू और समिति द्वारा संपादित किए जा रहे विभिन्न कार्यों,विभाग से प्राप्त हो रहे सुविधाओं, उपलब्ध कराए जाने वाले अन्य सुविधाओं, विभिन्न मद के लिए आवंटन की आवश्यकता, बाल कल्याण समिति और किशोर न्याय बोर्ड के सामाजिक कार्यकर्ता की बहाली सहित अन्य कर्मियों की नियुक्ति के संबंध में विस्तृत रूप से अवगत कराया गया। राज्यस्तरीय टीम के द्वारा निरीक्षण के क्रम में पूरी अवधि तक जिला बाल संरक्षण पदाधिकारी ब्यास ठाकुर, विधि सह परविक्षा अधिकारी विनय कुमार शर्मा, संरक्षण पदाधिकारी शमा परवीन, संस्थागत देखभाल राजेश कुमार मंडल, संरक्षण पदाधिकारी, गैर संस्थागत देखभाल, जिला बाल संरक्षण इकाई,पाकुड़ साथ में उपस्थित रहकर आवश्यक सहयोग प्रदान किया।

संक्षिप्त समाचार

डीसी ने सदर अस्पताल का किया औचक निरीक्षण

- **चिकित्सक/ कर्मी अनुपस्थित पाए गए जिनका एक दिन का वेतन/मानदेय में कटौती करने का दिया निर्देश, मांगा स्पष्टीकरण**
- **उपायुक्त ने स्पष्ट कहा कि कार्य में लापरवाह चिकित्सक एवं कर्मियों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा**

पाकुड़ः (झारखण्ड देखो,प्रतिनिधि)। सदर अस्पताल का उपायुक्त वरुण रंजन ने औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान ड्यूटी में तैनात चिकित्सक कर्मचारियों की उपस्थिति का जांच की। जांच क्रम में अस्पताल में कार्यरत कई चिकित्सक व कर्मचारी अनुपस्थित पाये गये। इससे नाराज उपायुक्त श्री वरुण रंजन ने अनुपस्थित चिकित्सकों व कर्मचारयों के एक दिन का वेतन/ मानदेय काटने का निर्देश देते हुए सभी से स्पष्टीकरण पूछा है।इसके साथ साथ उन्होंने भर्ती मरीजों को दी जाने वाली सुविधा का अवलोकन किया। उन्होंने साफ-सफाई का भी जायजा लिया। कहा कि अस्पताल आने वाले मरीज एवं उनके परिजनों से सौहार्दपूर्ण व्यवहार करें। उन्होंने भर्ती मरीजों को भी प्रावधान के अनुरूप सभी सुविधा उपलब्ध करवाने को कहा। अस्पताल की साफ सफाई, ब्लीचिंग का छिड़काव नियमित करने का निर्देश दिया। उन्होंने सरकार द्वारा प्रदत्त सभी सुविधाओं से मरीजों को लाभ पहुंचाने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने सभी चिकित्सक एवं कर्मचारियों को प्रतिदिन समय से सदर अस्पताल में उपस्थित रहकर अपने दायित्व का निर्वहन करने का निर्देश दिया. मौके पर विशेष कार्य पदाधिकारी विकास कुमार त्रिवेदी समेत अन्य उपस्थित थे।

मवेशी तस्कर बड़का सोरेन को गिरफ्तार कर भेजा जेल

लिट्टीपाड़ा(पाकुड़): (झारखण्ड देखो,प्रतिनिधि)। लिट्टीपाड़ा क्षेत्र केसिमलोंग ओपी पुलिस ने शनिवार को मवेशी तस्कर बड़का सोरेन को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया. जानकारी के अनुसार नवम्बर 2022 में लिट्टीपाड़ा थाना क्षेत्र के तालझारी निवासी वाहन चालक बड़का सोरेन पिक अप भेन से गोड्डा की ओर से हिरणपुर मवेशी लेकर जा रहा था, जिसे कुटलो के समीप रोकर पकड़ने का प्रयास किया तो रात्रि का फायदा उठाकर चालक व मवेशी वाहन से कूदकर भाग गया था. ओपी प्रभारी सत्यदेव प्रसाद ने बताया कि वाहन चालक, वाहन मालिक व मवेशी तस्कर के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था. जिसमें सभी फरार चल रहा था. जिसमे वाहन मालिक न्यायलय से बेल लें लिया है जबकि मवेशी तस्कर को गिरफ्तार करने के लिए लगातार छापामारी की जा रही है. वही शनिवार को वाहन चालक बड़का सोरेन को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया.

ओबीसी के स्थान पर एसी/ एसटी श्रेणी बताकर फर्जीवाड़ा करने वाले लाभुकों पर प्राथमिकी दर्ज करने का दिया निर्देश

पाकुड़ः (झारखण्ड देखो,प्रतिनिधि)। जिला आपूर्ति पदाधिकारी संजय कुमार दास के द्वारा बताया गया कि 30.05.2023 के प्राप्त जाँच प्रतिवेदन के आलोक में पाकुड़ प्रखण्ड अंतर्गत मानिकापाड़ा पंचायत एवं झिकरहाटी के वैसे लाभुक जो ओबीसी श्रेणी का है, परंतु एसी/एसटी श्रेणी बताकर ऑनलाईन आवेदन के माध्यम से राशनकार्ड में फर्जीवाड़ा करने वाले वैसे लाभुको क्रमशः समसेर शेख (कार्ड सं०-202801023503) रोजीना बीबी (कार्ड सं०- 202801020099), तोहीद अली (कार्ड सं०-202801016875), मेमेरा बीबी (कार्ड सं०-202801022987), हजेला बीबी (कार्ड सं०-202801007370) एवं संलिप्त प्रज्ञाकेन्द्र / बिचौलिया/ कम्प्यूटर ऑपरेटर तथा अन्य व्यक्ति पर प्राथमिकी दर्ज कराने का निर्देश प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी पाकुड़ को दिया.

मुख्यमंत्री ग्राम गाड़ी योजना से ग्रामीणों को मिलेगा परिवहन का लाभ

इस निमित्त राज्य स्तरीय समिति को भेजी जानी है प्रस्ताव

(झारखण्ड देखो,प्रतिनिधि)

पाकुड़ः मुख्यमंत्री ग्राम गाड़ी योजना 2022 के तहत नए ग्रामीण मार्गों को चिन्हित कर प्रस्ताव अथवा अनुशंसा राज्य स्तरीय समिति को अनुमोदनार्थ भेजी जानी है। इस योजना का मूल उद्देश्य ग्रामीण कनेक्टिविटी हेतु एवं निजी बस ऑपरेटरों को प्रोत्साहित करने तथा ग्रामीणों को बेहतर सुविधा मुहैया कराना है। इस प्रयोजन हेतु अमड़ापाड़ा बीडीओ की अध्यक्षता में प्रखंड स्तरीय समिति का गठन किया गया है। इस समिति में बीपीआरओ, पंचसुत समिति

सदस्य एवं बैंक अथवा वित्तीय संस्थान के प्रतिनिधि को बतौर सदस्य शामिल किया गया है। इस संदर्भ में बीडीओ कुमार देवेश द्विवेदी ने बताया कि निदेशानुसार उद्देश्य को सफल बनाने हेतु प्रखंड के विभिन्न नए ग्रामीण मार्गों को चिन्हित कर प्रस्ताव डीसी को भेजा जाएगा। इस योजना के तहत सुदूर ग्रामीणों के परिवहन सुविधा के लिए छोटे बड़े वाहन उपलब्ध कराए जाएंगे।

बिना हेलमेट वाहन चलाने वालों के विरूद्ध सघन अभियान

प्रदेश भर में 37 हजार 771 दुपहिया वाहनों का चालान

(झारखण्ड देखो,प्रतिनिधि)

जयपुर । प्रदेश में बढ़ती हुई सड़क दुर्घटनाओं में दुपहिया वाहन चालकों व सवारी की होने वाली मृत्यु में कमी लाने हेतु शनिवार को बिना हेलमेट दुपहिया वाहन चलाने वालों के विरूद्ध संचालित एक दिवसीय सघन अभियान के तहत 37 हजार 771 दुपहिया वाहन चालकों का चालान किया गया। अतिरिक्त महानिदेशक यातायात श्री वी के सिंह ने बताया कि अभियान में आमजन के व्यापक सहयोग मिला और अधिकांश वाहन चालक यातायात नियमों का पालन करते हुए मिले।

श्री सिंह ने भीषण गर्मी के बावजूद यातायात पुलिस कर्मियों द्वारा प्रदेश भर में किए गए अच्छे कार्यों की सराहना की एवं भविष्य में भी इसी प्रकार लगन और निष्ठा के साथ कार्य करने का आवाहन किया।

उन्होंने बताया कि यातायात पुलिस द्वारा प्रदेश में सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए व्यापक प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने सभी दुपहिया वाहन चालकों को सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए स्वयं की सुरक्षा हेतु अनिवार्य रूप से उपयुक्त गुणवत्ता का हेलमेट पहनने का आग्रह किया।

साथ ही अभिभावकों से अपने बच्चों को दुपहिया वाहन चलाते समय अनिवार्य रूप से हेलमेट पहनाने का आग्रह किया।

रात्रि चौपाल कार्यक्रम के तहत हो रहे कार्यों की डीडीसी ने की समीक्षा

- **रात्रि चौपाल में कुल 5440 आवेदन प्राप्त हुए, जिसमें से 5013 का निष्पादन कर दिया गया है, शेष 427 प्रकिया में जल्द से जल्द निष्पादन किया जाएगा**
- **गरीबों के लिए फायदेमंद साबित हो रहा रात्रि चौपाल कार्यक्रम**

(झारखण्ड देखो,प्रतिनिधि)।

पाकुड़ः शनिवार को समाहरणालय सभागार में उप विकास आयुक्त मो० शाहिद अख्तर ने रात्रि चौपाल कार्यक्रम के तहत हो रहे कार्यों की समीक्षा की।

रात्रि चौपाल के दौरान प्राप्त आवेदनों एवं आवेदनों के निष्पादन की प्रखंडवार समीक्षा करते हुए उप विकास आयुक्त ने पदाधिकारियों को ज्यादा से ज्यादा लाभुकों को सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ देने एवं रात्रि चौपाल कार्यक्रम के दौरान प्राप्त हो रहे आवेदनों को त्वरित निष्पादित करने का निर्देश दिया।

उप विकास आयुक्त ने कहा कि रात्रि चौपाल में आमजनों द्वारा बिजली से संबंधित शिकायतें, पेयजल, 15 वे वित्त आयोग, मनरेगा जॉब कार्ड, राशन, स्वास्थ्य, पशुपालन, शिक्षा, आंगनबाड़ी, पेंशन, कृषि आदि से संबंधित शिकायतें जो प्राप्त हुई है।

उसका त्वरित निष्पादन करने का संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया। मौके पर सिविल सर्जन डॉ मंटू कुमार टेकरीवाल, अनुमंडल पदाधिकारी हरिवंश पंडित, जिला आपूर्ति पदाधिकारी संजय कुमार दास, जिला शिक्षा पदाधिकारी रजनी देवी, जिला कल्याण पदाधिकारी विजन उरांव, जिला पशुपालन पदाधिकारी डॉ कमलेश कुमार भारती, जिला योजना पदाधिकारी अनूप कुजूर, जिला शिक्षा अधीक्षक मुकुल राज समेत अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे.

जबरदाहा में विकास के नाम पर मची है लूट, नाली निर्माण में पत्थर के धूलकण डस्ट का प्रयोग

(झारखण्ड देखो,प्रतिनिधि)

हिरणपुर(पाकुड़): पाकुड़ जिला का सबसे पिछड़ा प्रखंड लिट्टीपाड़ा तो है ही, परंतु लिट्टीपाड़ा के जबरदाहा पंचायत का जबरदाहा गांव आज भी विकास के नाम पर कोसों दूर है, नहीं है कि यहां पंचायत, जिला या अन्य मद से खर्च नहीं होता आया है, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि जिस रफ्तार से खर्च होता आया है सरासर लूट को ही दर्शाता है, धरातल पर इसका कई उदाहरण भी मौजूद है। विकास के नाम पर कार्य भी वैसा जिसे देख यह प्रतीक होगा कि जनप्रतिनिधि तथा विभाग के पदाधिकारियों कोई कार्य योजना या स्थल निरीक्षण ही कभी नहीं होता, टेबल में योजना की स्वीकृति और एग्रीमेंट उसके बाद बिचौलियों की बल्ले-बल्ले। ऐसा इसीलिए क्योंकि जो भी विकास कार्य हुआ है. उसकी उपयोगिता आवश्यकता

और गुणवत्ता तीनों ही दृष्टि से कहीं भी ठीक नहीं दिखता है, सिर्फ मुनाफा के कारण जहां-तहां बिना देखे कार्यों की स्वीकृति देना और रुपयों का बंदरबांट करते आए हैं, यही कारण है कि जबरदाहा पंचायत का जबरदाहा गांव आज भी नारकीय जीवन जीने को बाध्य हैं, इस मोहल्ला के आम व्यक्ति हो या खास अपने ही गांव के सड़कों में नाक में उंगली दबा कर और पैर कहां रखें सोच कर चलते हैं, यानी कह सकते हैं जबड़दाहा गांव मैं ₹स्वच्छ भारत मिशन₹ अभियान भी पूर्णता फेल है, हर जगह गंदी नाली का पानी का बहाव वह भी सड़कों में उस पर कचरा का अंबार वालों भर बना रहता है। जानकर आश्चर्य होगा इसी मोहल्ला से पिछले बार भी मुखिया थे और परिवर्तन होकर वर्तमान में भी हैं, गांव में कुछ संभ्रांत शिक्षित वर्ग भी हैं सभी का मानसिकता और जागरूकता के अभाव के कारण जो भी फंड आता है, खानापूर्ति कर बंदरबांट हो जाता है। क्या हुआ जिस योजना की जहां आवश्यकता थी वहां बन ही नहीं पाया और विभागीय पदाधिकारियों की तो बात ही जुदा है उन्हें निरीक्षण कर कानों के आवंटन करने से नहीं बल्कि कागजी खानापूर्ति पूर्ण करने से ही मतलब रहा है, यही कारण है कि यहां के लोग आज भी नारकीय जीवन जीने को विवश हैं चाहे परिणाम गंदगी के कारण महामारी तक क्यों ना पहुंच जाए।

● चलते हैं कुछ विकास के कार्यों को देखते हैं

हाल ही में जबरदाहा मोहल्ला होते हुए शमशान जाने वाले सड़क किनारे पंचायत से नाली का निर्माण कराया गया, निर्माण में लूट का आलम यह रहा की बालू की जगह डस्ट से कोटिंग युक्त पत्थर की जोड़ाई कर दी गई, सुत्रों पता चला की उक्त नाली को ऊपर से चकाचक कर पूरा बिल का निकासी हो गया, जबकि योजना स्थल पर आज तक किसी भी प्रकार का सूचना पट्ट योजना अस्थल में नहीं लगाया गया है, इससे अंदाजा लगाया जा सकता है यहां लूट का आलम क्या है, इस संबंध में संबंधित जेई से पूछने पर कि आपने कभी अस्थल निरीक्षण किया था या फिर काम को देखे थे कुछ भी कहने से इंकार कर गये, वही जब संबंधित पंचायत सचिव से काम के दरमियान पूछा गया तो कहे अब तक योजना स्वीकृति नहीं हुई है और ना ही एग्रीमेंट, जबकि मुखिया प्रतिनिधि ने भी काम कि जानकारी से इंकार कर गए थे। आश्चर्य है कि उक्त घटिया नाली को ही अकल निरीक्षण कर कुछ हटकर बनाया जाता तो मुख्य सड़कों का कीचड़ और गंदगी युक्त पानी से आम जन को रात मिलता। गांव में पीसीसी सड़क तो है सड़क किनारे कचरा और गंदगी से भरा पड़ा नाली भी है परंतु इस ओर ना ही ध्यान गांव वालों की है और ना ही स्वच्छ भारत मिशन का जागरूकता का प्रभाव, फलस्वरूप सड़कों में ही गंदगी और बदबूदार युक्त पानी का बहाव दरवाजा के सामने से सभी का होता है कुछ लोग तो अपने दरवाजे के सामने नानी को ही बंद कर दिया है ताकि गंदगी का बहाव ना हो फलस्वरूप सड़क में ही पानी का बहाव होता है। कुछ जगह तो नाली से नाली जोड़ने का अभाव रहा है जो बना ही नहीं और नाली का जीर्णोद्धार नहीं कराना भी मुख्य बज़ह रहा है, साथ ही पदाधिकारियों और जन प्रतिनिधियों का कभी निक्षण ना होना भी मुख्य बज़ह है।

संक्षिप्त समाचार

नेशनल गेम में दुमका के श्रेष्ठ कुमार और शंकर यादव का हुआ चयन

दुमका/झारखंड देखो। स्कूल गेम फेडरेशन ऑफ इंडिया का नेशनल गेम जो दिल्ली में 6 जून से 12 जून छत्रसाल स्टेडियम मैं आयोजन हो रहा है ।उसमें दुमका के दो लड़के श्रेष्ठ कुमार और शंकर यादव जो अपनी प्रतिभा और दमखम दिखाकर रांची में आयोजित चयन प्रतियोगिता में सफल होकर नेशनल गेम में अपना स्थान सुनिश्चित कर लिए हैं। दुमका में लगातार कुश्ती के खिलाडी अपना नाम रोशन कर रहे हैं यह सभी खिलाड़ी कोच फरीद खान जो जयपाल सिंह मुंडा खेल रतन अवार्ड से सम्मानित हो चुके हैं ।सभी बच्चे उनके पास प्रशिक्षण ले रहे हैं दुमका में सबसे ज्यादा नेशनल खेलने वाले बच्चे फरीद खान से प्रशिक्षण ले रहे हैं और राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर मेडल लॉकर दुमका का नाम रोशन कर रहे हैं ।इन दोनों बच्चों को दुमका कुश्ती संघ के अध्यक्ष डॉक्टर तुषार ज्योति ने बहुत बहुत बधाई दीया और नेशनल गेम में बेहतर करने की कामना की।दुमका के डीआईजी सुदर्शन प्रसाद मंडल जी ने बच्चों को बहुत-बहुत बधाई दी और उन्हें नेशनल गेम में दुमका का नाम रोशन करने का आशीर्वाद दिया।सिदो कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय के सपोर्ट डायरेक्टर शम्स तबरेज खान ने बच्चों को कहां कि दुमका के बच्चे अपने प्रतिभा का हुनर पूरे देश में दिखेगा। बच्चे नेशनल गेम में भी अपना दुमका का नाम रोशन करेंगे कुश्ती संघ के सचिव संदीप कुमार जय बम बम ने भी बच्चों आशीर्वाद दिया ।दुमका कुश्ती उसके सभी सीनियर प्लेयर अंजू टू डू, कोमल मरांडी, ललिता कुमारी ,अफरीद खान, प्रेमिका हेंब्रम ने भी दोनों बच्चों को बहुत बहुत बधाई दी।

घायलों को जल्द से जल्द स्वास्थ्य लाभ हो इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना

दुमका/झारखंड देखो। सिविल सोसायटी दुमका उड़ीसा के बालासोर में हुए भयंकर ट्रेन दुर्घटना में सभी मृतकों की आत्मा की चिर शांति तथा सभी घायलों को जल्द से जल्द स्वास्थ्य लाभ हो इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है तथा ईश्वर सभी के परिजनों को इस घोर संकट से उबरने की शक्ति प्रदान करें यही कामना है।साथ ही रेलवे प्रबंधन से आग्रह करता है कि ऐसी दुर्घटना की पुर्णावृत्ती नहीं हो इसके लिए कार्य करें।इस दुर्घटना में लगभग 14 लोग हमारे दुमका जिला से भी कोरमंडल एक्सप्रेस में थे जो तमिलनाडु जा रहे थे सभी घायल हुए हैं। झारखंड सरकार व दुमका जिला प्रशासन इनको सकुशल वापस ले कर आवें यह मांग भी सिविल सोसायटी दुमका करता है। संवेदना प्रकट करने वालों सिविल सोसायटी दुमका के अध्यक्ष राधेश्याम वर्मा,वरीय उपाध्यक्ष प्रेम केसरी, उपाध्यक्ष प्रदीप्त मुखर्जी,मनोज कुमार घोष,सचिव संदीप कुमार जय बमबम,मनोज सिघानियां,अशोक कुमार राउत,राजेश कुमार राउत,कोषाध्यक्ष सुरज केसरी, विद्यापति झा,जगननाथ पंडित,संतोष चौधरी,निलेश कुमार झा,बिपिन अग्रवाल सहित सभी सदस्य शामिल हैं।

मयूराक्षी ग्रामीण महाविद्यालय में मनाया गया विश्व साईकिल दिवस

दुमका/झारखंड देखो। शनिवार को भारत सरकार के युवा एवं खेल मंत्रालय के तत्वावधान में राष्ट्रीय सेवा योजना की ओर से मयूराक्षी ग्रामीण महाविद्यालय रानीश्वर में प्रभारी प्राचार्य प्रो विभाष चंद्र झा की अध्यक्षता मे विश्व साईकिल दिवस मनाया गया।जिसमे एनएसएस वालंटियर्स ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।मौके पर प्रभारी प्रधानाध्यापक ने कहा कि साईकिल दिवस का उद्देश्य मानव जीवन के स्वास्थ्य के क्षेत्र में बहुत ही लाभदायक हों सकता है,इस कार्यक्रम का उदेश्य समाज में स्वास्थ्य के दृश्टिकोण से साईकिल के उपयोग एवं महत्व ×को अपने जीवन में अपनाना है

आज वर्तमान समय में लोग शारीरिक श्रम नहीं करना चाहते जिनके कारण विभिन्न बीमारियों का शिकार होना पड़ता है।इस कार्यक्रम का उद्देश्य है साईकिल का अपने जीवन में उपयोग कर पर्यावरण को स्वच्छ एवं अपने को स्वस्थ बनावे। इस अवसर पर एनएसएस वालंटियर्स इकाई 3 ×की शर्मिला सोरेन,कोयल गोराइ, इकाई 5 की संचिता घोष, संगीता घोष, रुपसानाथा बागती तथा बिभिन्न महाविद्यालय कर्मचारी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम् भूमिका निभाई।इसकी जानकारी , मीडिया प्रभारी डा रूपम कुमारी ने दी हैं।

संताली भाषा बहुत ही समृद्ध भाषा और प्रोटो ऑस्ट्रलायड समूह का सबसे बड़ा भाषा हैं: डॉ संदेशा

भारत में पहली बार संताली भाषा शिक्षण (एसएलटी) पद्धति का शुभारंभ

दुमका/झारखंड देखो।

सिदो कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय दुमका के कांन्फ्रेंस हॉल में टु डे वर्कशॉप ऑन लैंग्वेज टीचिंग मैथोडॉलोजी : पॉरसपैक्टिव स्पोकेन संताली का समापन हुआ।समापन के दिन जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली से आए मुख्य वक्ता डॉ संदेशा रायप्पा न अमर शहीद सिदो कान्हु मुर्मू की प्रतिमा में पुष्पांजलि अर्पित करने के पाश्चत दीप प्रज्जवलित कर कार्यशाला का सत्र को आगे बढ़ाया गया। कार्यशाला को संबोधित करते हुए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली से आए डॉ संदेशा रायप्पा ने कहा कि संताली भाषा बहुत ही समृद्ध भाषा और प्रोटो ऑस्ट्रलायड समूह का सबसे बड़ा भाषा हैं। दूरदर्शिता एवं गहन मेहनत के बल पर इस भाषा को दुनिया के सामने रखा जा सकता है। जिस प्रकार से दुनिया के भाषा को अध्ययन करने की पद्धति अलग-अलग प्रकार से निर्माण किया गया है उसी प्रकार से संताली भाषा को भी सीखने की पद्धति और अध्ययन करने की पद्धति का निर्माण होना चाहिए। हम जानते हैं अंग्रेजी भाषा को सीखने के लिए अंग्रेजी भाषा शिक्षण(इएलटी) पद्धति बनाई गई है उसी की तर्ज पर आज संताल अकादमी, सिदो कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय, दुमका के पहल पर भारत में पहली बार एसएलटी यानि संताली लैंग्वेज टीचिंग कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। मुख्य वक्ता डॉ संदेशा रायप्पा ने कहा कि यह कार्यक्रम निश्चित तौर पर कारगर और सफल सिद्ध होगा क्योंकि अंग्रेजी भाषा शिक्षण पद्धति के बल पर आज हम अंग्रेजी भाषा को दुनिया के चारों कोनों पर पाते हैं लेकिन संताली जैसा समृद्ध भाषा एक क्षेत्र पर सीमित होकर रह गया है इसलिए इसकी पढ़ाई, लिखाई और अध्ययन की पद्धति को थोड़ा सा अलग करना पड़ेगा और समृद्ध भाषा की दृष्टि से इसको प्रस्तुत करना होगा इसकी पुर्ति के लिए ही आज एसएलटी आने संताली भाषा टीचिंग प्रोग्राम का शुभारंभ किया गया है। उन्होंने कहा कि सभी भाषा की अपने-अपने विशेषताएं हैं। इसलिए सबको हम बराबर की दृष्टि से नहीं देख सकते हैं और न एक पद्धति से नहीं पढ़ सकते हैं। अंग्रेजी सीखने की पद्धति अलग है, हिंदी सीखने की पद्धति अलग है, बांग्ला और मराठा इत्यादि भाषा सीखने की पद्धति अलग है। उन भाषाओं के भाषाविदों ने अपनी भाषा के अनुसार सीखने की पद्धति का निर्माण किया है, उसी प्रकार संताली भाषा को सीखने की पद्धति का निर्माण होना अत्यावश्यक हो गया था जिसे आज पुरा किया गया।डॉ रायप्पा ने पूरे सत्र में भाषा सीखने की पद्धति, दूसरे के समक्ष प्रस्तुत करने की पद्धति, अनुवाद करने की विशेषता, आदिवासी भाषा और संस्कृति को संरक्षण करने की विधि, आदिवासी ज्ञान और परंपरा, रिसर्च टॉपिक का सिलेक्शन, आदिवासी फूड चैन, आदिवासियों का निवास स्थान, भारत में आदिवासियों के स्थान और विशेषता आदि के विषय में विस्तारपूर्वक समझाया। उन्होंने कई सारे ज्ञानवर्धक चीजें पावर प्रजेंटेशन के द्वारा समझाया।

सत्र शुरू करने से पहले सुबह उन्होंने संताल अकादमी के द्वारा संताली सर्टिफिकेट कोर्स के तहत पढ़ाए जा रहे छात्रों से मिला। छात्रों का हाल समाचार जाना, छात्रों को सिखाया जा रहे घूर के बारे में जानकारी प्राप्त किया। और शिक्षकों को सरल से सरल मध्यम के द्वारा संताली भाषा को सिखाने का गुर बताया।इस मौके पर संताल अकादमी के सचिव डॉ सुशील टुडू, संताल अकादमी के उप निर्देशक डॉ सुमित्रा हेंब्रम, स्नातकोत्तर संताली विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ शर्मिला सोरेन, संताल अकादमी के सदस्य सह साहित्यकार विजय टुडू, संताल अकादमी के सदस्य डॉ चंपावती सोरेन, मॉडल कॉलेज दुमका के प्राचार्य डॉ मेरी मार्गरेट टुडू, संताल परगना महाविद्यालय संताली विभागाध्यक्ष डॉक्टर होलिका कुमारी मरांडी, इग्नासियस मराण्डी, निर्मल मुर्मू, डॉ विनोद मुर्मू, अमित मुर्मू, शिध्दोर हांसदा, संताली विभाग के रिसर्च स्कॉलर एवं स्नातकोत्तर संताली विभाग के छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

वादा पूरा करो हेमंत सरकार, सहायक अध्यापक अब आ रहे हैं आपके द्वार : नन्द दुलाल

दुमका/झारखंड देखो।

शनिवार को झारखंड राज्य प्रशिक्षित सहायक अध्यापक संघ के बैनर तले महिषवाथान हटिया परिसर में नन्द दुलाल लायेक की अध्यक्षता तथा दुर्गाचरण पाल,जिला संगठन सचिव, शमसूल अंसारी प्रखण्ड सचिव काठीकुंड व शेख मो आली के उपस्थिति में आगामी आंदोलनात्मक रणनीति के लिए विशेष बैठक सम्पन्न हुई।बैठक में उपस्थित जिला सचिव ने बताया कि वर्तमान हेमंत सोरेन के नेतृत्व में बनी महागठबंधन की सरकार पारा शिक्षकों संप्रति सहायक अध्यापकों को वेतनमान देने का वादा के साथ सत्ता में आई थी।

कहा कि 14 दिसंबर 2021 को दिवंगत शिक्षा मंत्री स्वर्गीय जगन्नाथ महतो की अध्यक्षता में हुई हाई लेवल कमिटी की बैठक में शिक्षा मंत्री दिवंगत जगरनाथ महतो एवं अधिकारियों के द्वारा यह कहा गया कि पारा शिक्षकों की बहाली में आरक्षण रोस्टर का पालन नहीं किया गया है,इसीलिए वेतनमान देने से न्यायालय में मामला चला जाएगो वर्तमान में हाई कोर्ट रांची के द्वारा भी वेतनमान के मुद्दे पर न्यायादेश पारित किया गया है (अपितू आकलन परीक्षा के बाद झारखंड राज्य प्रशिक्षित सहायक अध्यापक संघ वेतनमान के मुद्दे पर आगे निर्णय लेगी) हाई लेवल कमिटी एवं सहायक अध्यापक संघ के बीच हुए लिखित समझौते में यह भी अंकित है कि भविष्य में वेतनमान के समतुल्य सहायक अध्यापकों को मानदेय दिया जाएगा,परंतु लगभग 17 महीनों बाद भी सरकार के द्वारा इस दिशा में कोई कार्यवाही नहीं की गई है।इसके अलावा सामान्य भविष्य निधि कल्याण कोष का मामला भी लंबित है।सरकार/विभागीय अधिकारी/जैक अधिविध परिषद रांची के द्वारा प्रस्तावित आकलन परीक्षा के कई मुद्दों पर मनमानी की जा रही है।

उपरोक्त तमाम मुद्दों के समाधान के लिए मुख्यमंत्री,शिक्षा मंत्री एवं विभागीय अधिकारियों को झारखंड राज्य प्रशिक्षित सहायक अध्यापक संघ के द्वारा कई बार पत्राचार किया गया है परंतु मामला यथावत है।

इसलिए हेमंत सरकार और उसके पदाधिकारी को कुंभकर्णी निद्रा से जगाने के आगामी 8 जून को जिला मुख्यालय में मशाल जूलूस निकाला जाएगा।बैठक में जिला प्रतिनिधि निर्मल कुमार सिंह,नाजीर हुसैन, सविता रंजन घोष,नीरु टुडु,माया राणी साहा,स्टेनशीला मरांडी,सुशील बेसरा,अरुण पाल,गणेश दलुई, मितन सोरेन,सनातन दास,परेश मरांडी,तपन गोराई,दीनबंधु चौधरी आदि सैकड़ो सहायक अध्यापक उपस्थित रहे।

मिशन लाइफ योजना अंतर्गत क्लाइमेट रेसिडेंस एंड स्मार्ट एग्रीकल्चर विषय पर बैठक आयोजित

दुमका/झारखंड देखो। जामा प्रखंड मुख्यालय के सभागार में शनिवार को मिशन लाइफ योजना अंतर्गत क्लाइमेट रेसिडेंस एंड स्मार्ट एग्रीकल्चर विषय पर अंचलाधिकारी आशीष कुमार मंडल के अध्यक्षता में प्रगतिशील कृषकों एवं किसान मित्रो के साथ एक आवश्यक बैठक आयोजित की गई। बैठक में अंचलाधिकारी जामा द्वारा सभी किसान मित्रों को झारखण्ड कृषि ऋण माफी योजना के अन्तर्गत छूटे हुए किसानो का ईकेवाईसी कराने और पीएम किसान योजना के अन्तर्गत छूटे हुए किसान का ईकेवाईसी करने का निर्देश दिया गया।उन्होंने बताया कि इस वर्ष को सरकार द्वारा मोटा अनाज वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है,और मडुवा की खेती को बढ़ावा दिया जाना है। इसके लिए अधिक से अधिक किसानों को जानकरी दें । इस दौरान उपस्थित किसानों को शत प्रतिशत अनुदान में दिए जाने वाले मडुवा के बीज के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।और मडुवा के खेती के तौर तरीके के बारे मे बताया गया ।इस कार्यक्रम मे एटीएम योगेश नारायण सिंह के अलावा किसान मित्र एवं प्रगतिशील कृषक उपस्थित थे ।

नवअंगीभूत महाविद्यालयों के शिक्षकों ने डेट शिफ्टिग ,प्रोमोशन और एरियर भुगतान की मांग की

झारखंड देखो प्रतिनिधि।

- **झारखंड उच्च न्यायालय ने राज्य सरकार के 30-4-1986 से सब्सटानसिव अपाइन्टमेंट सम्बन्धी**
- **सरकार के आदेश दिनांक 18-5-2007 को किया खारिज और सुप्रिम कोर्ट के फैसले(2004,सिविल**
- **अपिल नं.6098/ 1997) के आलोक में पद सृजन की तिथि से सेवा निर्धारण का दिया आदेश।**
- **कोर्ट के आदेश के अनुरूप कार्रवाई नहीं किये जाने का स्वीकृत पदो पर कार्यरत शिक्षकों ने लगायाआरोप और इसे सुप्रीम कोर्ट के आदेश की अवहेलना बताया।**
- **स्वीकृत पदों पर कार्यरत शिक्षकों ने न्यायालय के आदेशों के आलोक में पद सृजन की तिथि से सब्सटानसिव नियुक्ति निर्धारित करने,प्रोन्नति देने और बकाये का भुगतान करने की मांग की**

दुमका। झारखंड उच्च न्यायालय,रांची के द्वारा दिये कई फैसलों से प्रदेश में बारह नव अंगीभूत महाविद्यालयों के अनेक शिक्षकों को बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है। इन फैसलों से पद सृजन की तिथि से उन्हें वार्षिक बढ़ोतरी का लाभ मिलने का ही नही बल्कि दस वर्ष की सेवा

ळी इङ्ग४र्ल्ल ढ१ङ्खेङ्ग२ङ्गल्ल रइ३४शी, छी३शी१ ठङ्ग. इरव-27/85-4032/ऋ(1) र्शि 24-12-1986

और आठ वर्ष की सेवाछी३शी१ ठङ्ग.इरव-0/87-3975/ऋ(1)३.22-2-1984 के तहत लेक्चरर से रीडर के पद पर उनके प्रोमोशन का मार्ग भी प्रशस्त हो गया। ज्ञातव्य है कि स्थानीय सिदो कान्हूं मुर्मू वि.वि.,दुमका के अन्तर्गत बी. एस. के.कालेज ,बरहरवा(साहिबगंज) और मिल्लत कालेज,परसा (गोड्डा) दो नव अंगीभूत कालेज हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार माननीय जस्टिस अग्रवाल कमिशन की रिपोर्ट और सिविल अपील नं. 6098/ 1997में सुप्रीम कोर्ट के फैसले दिनांक 12-10-2004 के आलोक में विवि.ने इन महविद्यालयों के शिक्षकों की सेवा को एबजोर्व कर लिया। विवि. ने नोटिफिकेशन नं.23/05 दिनांक 7--4--2005 द्वारा बी.एस.के कालेज, बरहरवा और नोटिफिकेशन नं.09/05 दिनांक 03-03-05,26/05 दिनांक 07-4--2005 और 150, दिनांक 13-10-12 के द्वारा मिल्लत कालेज,परसा के शिक्षकों की सेवा को एबजोर्व कर लिया। बी.एस. के.कालेज,बरहरवा के नौ शिक्षक ऐसे थे जिनका भागलपुर विवि.,भागलपुर, बिहार से उनके पद सृजन की तिथि (14-8-1981) से वेतन निर्धारण किया गया था (पत्रांक 1605 दिनांक 02-7-1992) और इसी आलोक में उन्हें वेतन भुगतान किया जा रहा था । पर वर्ष 2007 में झारखंड सरकार ने कथित महाविद्यालयों के शिक्षकों का वेतन निर्धारण मनमाने तरीके से बिना किसी आधार के 30-4-1986 से कर दिया जबकि इन कथित शिक्षकों का पद प्राप्त जानकारी के अनुसार 1976--1981 से स्वीकृत था जिस पर वे कार्यरत थे और माननीय जस्टिस अग्रवाल कमिशन की रिपोर्ट हो चुकी थी जिसमें स्वीकृत पदों की संख्या और इन पर कार्यरत शिक्षकों का स्पष्ट उल्लेख था और सुप्रीम कोर्ट का कथित पैसला भी हो चुका था। झारखंड सरकार की ये कार्रवाई सुप्रीम कोर्ट के कथित आदेश के अनुकूल नहीं था। इससे इन महाविद्यालयों के शिक्षकों को आर्थिक क्षति हुई और वे टाइम बाउन्ड प्रोमोशन के लाभ से भी बंचित हो गये। सूचनानुसार इन महाविद्यालयों के शिक्षकों ने विवि. के पत्रांक एसकेएमयू/डक्र/883/18 दिनांक 1-12-2018 और पत्रांक --एसकेएमयू/जी/678/07 दिनांक 24-11-07 के आलोक में डेट शिह्रफ्टग और टाइम बाउन्ड प्रोमोशन के लिए आवश्यक दस्तावेजों के साथ विहित प्रक्रिया के अन्तर्गत कई बार आवेदन जमा किये और इसकी प्रतिलिपि/सूचना राज्य सरकार के सम्बन्धित अंधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई/निर्देश हेतु दी। पर कोई कार्रवाई नहीं होने पर कई शिक्षकों ने इस हेतु झारखंड उच्च न्यायालय, रांची में रिट दायर कर दी।सुबोध प्रसाद सिन्हा बनाम द स्टेट आफ झारखंड व अन्य डब्ल्यू.पी.(एस) नं. 3753/2010 में पारित आदेश में माननीय जस्टिस ने राज्य सरकार के दिनांक 30-4-1986 (दिनांक 18-5-2007) को सब्सटानसिव नियुक्ति निर्धारित करने सम्बन्धी सरकार के आदेश को खारिज कर दिया और पद सृजन की तिथि 14-8-1981 से सब्सटानसिव नियुक्ति निर्धारित करने हेतु सभी सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिया। इस आलोक में डाइरेक्टोरेट आफ हायर एजुकेशन,हायर एंड टेकनिकल एजुकेशन डिपार्टमेंट,गवर्नमेंट आफ झारखंड द्वारा डा.सुबोध प्रसाद सिन्हा का वेतन निर्धारण किया गया और निदेशक,उच्च शिक्षा के द्वारा विवि.को इसकी सूचना दी गयी(पत्रांक-5/ मु --11/2023..925 /अल्लली७४१- अ- ऋ दिनांक 21-4- 2023)और इसके साथ वेतन निर्धारण का चार्ट भी संलग्न किया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार डा. सिन्हा का वेतन निर्धारण उसी प्रकार से किया गया जैसा कि लगभग 31 वर्ष पूर्व वर्ष 1992 में स्वीकृत पदों पर कार्यरत बी.एस.के.कालेज,बरहरवा के नौ शिक्षकों का किया गया था जिसमें डा सिन्हा भी शामिल थे। (भागलपुर विवि.भागलपुर,बिहार, पत्रांक- 1605 दिनांक 02-7-1992)।

प्राप्त जानकारी के अनुसार डब्ल्यू.पी. (एस)नं.7555/2012 और डब्ल्यू.पी.(एस) नं.888 /2015 आदि में दिये गये फैसले में भी झारखंड उच्च न्यायालय के माननीय जस्टिस ने राज्य सरकार के दिनांक 30-4-1986 (दिनांक 18-5-2007) को सब्सटानसिव नियुक्ति निर्धारित करने सम्बन्धी आदेश को खारिज कर दिया और पद सृजन की तिथि से पेटिशनर्स की सब्सटानसिव नियुक्ति निर्धारित करने हेतु सभी सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिया।इतना ही नहीं कोर्ट ने इससे होने वाले सभी प्रकार के वित्तीय लाभ और प्रोमोशन देने का भी आदेश दिया। कथित महाविद्यालयों में स्वीकृत पद पर कार्यरत शिक्षकों का कहना है कि जब झारखंड उच्च न्यायालय,रांची के माननीय जजों नें अपने फैसलों में राज्य सरकार के कथित 30-4-1986 सम्बन्धी आदेश को खारिज कर दिया तो वे भी पद सृजन की तिथि से सब्सटानसिव नियुक्ति के कानूनी हकदार है और इससे होने वाले वित्तीय लाभ और दस वर्ष की सेवा चर्थ्र्ड्ड एट्टदद्ड घ्द्धद्दर्थ्दृद्यत्दद च्द्यठ्ठद्यद्वद्यड्ड, ख्र्ड्डद्यद्यड्डद्ध ×ग्द्द. एच्छ-27/85 -4032/ क्रच(1) ड्डठ्ठद्यड्डड्ड 24-12-1986 और आठ वर्ष की सेवा ख्र्ड्डद्यद्यड्डद्ध ×ग्द्द. एच्छ-0/87-3975/क्रच(1) ड्डद्य.22-2-1984 के तहत उन्हें प्रोमोशन से भी बंचित नही किया जा सकता। ऐसे शिक्षकों में मिल्लत कालेज,परसा के मो. करीम,मंजूर आलम,जेड. ए.रफीक, डा.एम.पी. साह, भूपाल शर्मा,इरफान,नईम अन्सारी,ए.अहमद,ए.वदूद अन्सारी और बी.एस.के. कालेज,बरहरवा के डा. सुबोध प्रसाद सिन्हा,डा.राजबहादुर मिश्रा,त्रिपुरारी प्रसाद दुबे,अरुण कुमार सिंह और ड़ा.दिनेश नारायण वर्मा शामिल हैं। इस सम्बन्ध में यह भी उल्लेखनीय है कि बी.एस.के.कालेज, बरहरवा के श्री अरुण कुमार सिंह,सेवानिवृत शिक्षक(31-01-207) ने वर्ष 2019 में विवि.को कथित चर्थ्र्ड्ड एट्टदद्ड घ्द्धद्दर्थ्दृद्यत्दद च्द्यठ्ठद्यद्वद्यड्ड, ख्र्ड्डद्यद्यड्डद्ध ×ग्द्द. एच्छ-27/85-4032/ क्रच(1) ड्डठ्ठद्यड्डड्ड 24-12- 1986 के तहत लेकचरर से रीडर के पद पर प्रोन्नति,तदनुरूप वेतन निर्धारण और बकाये के भूगतान हेतु आवेदन दिया। उन्होंने अपने आवेदन में एलपीए.नं.583-2009 हायर एजुकेसन लेटर नं.528 दिनांक 02-04-2013, ,नोटिफिकेशन आफ हायर टेकनिकल एजुकेशन एंड स्कील डवलपमेंट नं.01-मू1-134- 2016--05 दिनांक 14-12-2018 और चतुर्थ चरण में किये गये अंगीभूत महाविद्यालयों के शिक्षकों के प्रोमोशन हेतु डब्लयू.पी.(एस) 3375-2016 आदि में दिये गये आदेश -निर्देश का उल्लेख करते हुए आवश्यक कार्रवाई की मांग की। पर प्राप्त जानकारी के अनुसार किसी प्रकार की कार्रवाई किये जाने की कोई जानकारी नहीं है। इन महाविद्यलयों में स्वीकृत पदो पर कार्यरत शिक्षकों ने कोर्ट के आदेश के अनुरूप कार्रवाई नहीं किये जाने का आरोप लगाया और इसे सुप्रीम कोर्ट के आदेश की अवहेलना बताया।इन महाविद्यालयों में स्वीकृत पदों पर कार्यरत शिक्षकों ने उच्चतम न्यायालय और झारखंड उच्च न्यायालय के आदेशों के आलोक में पद सृजन की तिथि से सब्सटानसिव नियुक्ति निर्धारित करने,प्रोन्नति देने और बकाये का भुगतान करने की मांग की।

न्यूज अपडेट

संत जेवियर्स कालेज महारो को यूजीसी (नैक) से मिला बी- प्लस का दर्जा

दुमका/झारखंड देखो। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् ने सेंट जेवियेर्स कॉलेज महारो,दुमका को प्रथम चक्र के निरीक्षण के उपरांत बी प्लस का दर्जा प्रदान किया है।इस आशय की सूचना प्राप्त होने के बाद कॉलेज प्रबंधन,प्राध्यापकगण एवं अन्य सहकर्मियों के साथ-साथ छात्र छात्राओं ने खुशी का इजहार किया है।इस उपलब्धि से कालेज प्रबंधन अत्यंत उत्साहित एवं हर्षित हैं।ज्ञात हो कि बीते 15-16 मई को यूजीसी नैक के तीन सदस्यीय दल के द्वारा संत जवियेर्स कालेज,महारो का स्थलीय निरीक्षण किया गया था।जिसमें मूल्यांकन के बाद बी प्लस का दर्जा प्रदान किया गया है। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि को हासिल करने में सहभागी बने सभी शिक्षक-शिक्षकेतर कर्मियों,पूर्ववर्ती एवं वर्तमान छात्र-छात्राओं,तथा उनके अभिभावकों के प्रति कॉलेज के प्राचार्य डा स्टीफेन राज ने आभार व्यक्त किया है ।

नगर आयुक्त ने आवास योजना की प्रगति की समीक्षा

देवघर। देवघर नगर निगम में शुक्रवार को नगर निगम सभागार में प्रधनमंत्री आवास योजना की समीक्षा बैठक नगर आयुक्त सह प्रशासक की अध्यक्षता में की गई। अब तक स्वीकृत 15594 आवासों में 9516 आवास पूर्ण हो चुके है। वर्तमान में रूफ लेवल पर 832 आवास है जिसे 15 दिन के अंदर पूर्ण करने का निर्देश दिया गया है। साथ ही लिंटेल पर 2673 आवास को 1 महीने में ढलाई एवम फिनिशिंग कराने का निर्देश दिया गया। साथ ही पैरामॉन एवम पीएमसी को सभी लंबित आवास 15 दिन मे पूर्ण कराने का दिया गया। बैठक में नगर प्रबंधक अनुज किस्पोट्टा, सुधांशु शेखर, कौशल किशोर, तकनीकि विशेषज्ञ नवनीत राज, सुमन कुमार, एवम सभी सामुदायिक संगठन कर्ता, सी आर पी उपस्तिथ थे।

प्रशासनिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए बीडीओ अभय कुमार को मिला देवघर रत्न सह सम्मान

देवीपुर। राजेंद्र झा उन्मुक्त ।प्रखंड मुख्यालय स्थित बीडीओ कार्यालय कक्ष में तिलक सेवा समिति देवघर की ओर से देवघर रत्न सह सर्वोच्च नागरिक सम्मान से देवीपुर बीडीओ अभय कुमार को प्रशासनिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए नवाजा गया। तिलक सेवा समिति के केन्द्रीय अध्यक्ष हरेकृष्ण राय, सदस्य बरूण राय,हरेकृष्ण बरनवाल ने बीडीओ अभय कुमार को फूलमाला पहनाकर, शॉल ओढ़ाकर, प्रसस्थि पत्र और मेडल देकर सम्मानित किया।जानकारी हो कि तिलक सेवा समिति की ओर से विगत सात वर्षो से देवघर रत्न सह सर्वोच्च नागरिक सम्मान वैसे विभूतियों को दिया जाता है,जिन्होंने अपनी विशिष्ठ सेवाओं के माध्यम से जिला,राज्य और देश का नाम रोशन कर समाज को नई प्रेरणा दी हो।देवघर कोर्ट स्थित सभागार में शुक्रवार को एक समारोह में ग्यारह विशिष्ठ नागरिकों को देवघर रत्न से नवाजा गया,जिसमें देवीपुर बीडीओ अभय कुमार भी शामिल थे।प्रशासनिक व्यस्तता के कारण समारोह में शामिल नहीं हो सके, जिसकारण देवीपुर प्रखंड कार्यालय में तिलक सेवा समिति की ओर से बीडीओ अभय कुमार को सम्मानित कर प्रसस्थि पत्र प्रतीक चिह्न सौपा गया।

पुण्यतिथि पर पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय कृष्ण बल्लभ सहाय को श्रद्धांजलि

देवघर। आशुतोष झा। झारखंड प्रदेश कांग्रेस सेवादल के प्रदेश उपाध्यक्ष ने पुण्यतिथि पर संयुक्त बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री व महान स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय कृष्ण बल्लभ सहाय को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि दलितों, पिछड़ों एवं अल्पसंख्यकों के मसीहा कृष्ण बल्लभ बाबू सिर्फ एक राजनीतिज्ञ ही नहीं बल्कि कुशल प्रशासक भी थे। उनकी प्रशासनिक दक्षता की चर्चा राष्ट्रीय स्तर पर होती थी। जटिल से जटिल समस्याओं पर लोकतांत्रिक ढंग से तुरंत वे निर्णय लेते थे। ने कहा कि कृष्ण बल्लभ बाबू राजनीतिक शुचिता एवं सादगी के प्रतीक थे। उन्होंने हमेशा मूल्यों एवं सिद्धांतों की राजनीति की। उनके बताए रास्ते पर चलना ही उनके प्रति हम सबों की सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

जयंती पर स्वर्गीय पंडित बालकृष्ण भट्ट को श्रद्धांजलि

देवघर। आशुतोष झा । बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के पूर्व प्रवक्ता ने साहित्यकार स्वर्गीय पंडित बालकृष्ण भट्ट को जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे हिंदी के सफल काव्य- कार, पत्रकार, उपन्यासकार, नाटककार व निबंधकार थे। उन्हें आज की गद्य प्रधान कविता का जनक माना जाता है। हिंदी गद्य साहित्य के निर्माताओं में उनका प्रमुख स्थान है। भारतेंदु युग के वे प्रतिष्ठित निबंधकार थे। उनके निबंध सदा मौलिक और भावना पूर्व होते थे। अपने निबंधों द्वारा हिंदी की सेवा करने के लिए उनका नाम सदैव अग्रगण्य रहेगा। आरंभ से ही साहित्य सेवा में अभिरुचि रहने के कारण स्वर्गीय बालकृष्ण भट्ट हर तरह की सेवा बृति को तिलांजलि देकर आजीवन हिंदी साहित्य की सेवा करते रहे। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि स्वर्गीय भट्ट ने विभिन्न रूपों मे हिंदी की सेवा की और उसे धनी बनाया। अपनी वर्णनात्मक शैली, विचारात्मक शैली,भावात्मक शैली, परिचयात्मक शैली, व्यंगात्मक शैली के सृजन एवं पाश्चात्य शैली से गद्य लिखने की परंपरा का सूत्रपात करने के लिए साहित्य प्रेमियों के दिलों में वे सदैव बसे रहेंगे।

No Gandhi, Please!

Jharkhand dekho desk:

Professor M.C.Behera

There is no doubt that India has the potentiality of becoming the Visva Guru. The world recognises the contributions of great Indians from ancient time. In recent past, Gandhiji's non-violence mantra has become a global craving to address crises. Unfortunately, in India we take pride in contributions of our ancestors, but do not follow them. We take pride in Aryabhatta, Bhaskaracharya, Brahmagupta, Sushruta, Charaka, Pingala, Panini and many others. We hold Chanakya's magnums the Arthashastra as a seminal treaty on statecraft, economic policy and military strategy. But we inherit western system of education, follow all its branches of knowledge, promote them and practise them. We do not try to excel or contribute following our knowledge system except taking pride in the past. What we had is not important, but what we have is important in defining our identity. It will not be confounded to state that we believe in idols (ancestors/persons for their contributions) not in their ideals. Even general acceptability of the idols is being questioned owing to critical evaluation of their ideals. This is very much true in Indian context. Idols have formal acceptance, but not their ideals. Ironically, idols of recent past are owned by or believed to belong to one or the other community, group or particular ideology. Ambedkaraites project Gandhi hostile to Dalit cause in recent years. Even a few political and terrorist outfits do not consider Gandhi as the father of the nation. Few parties take shelter behind him. Sadly, his statues are vandalised in different places and even by Indian separatists in foreign countries.

When this is the emerging trend, it is nothing but an insult to great persons when we bring in their names with some motive without following their ideals.

None other than Mahatma Gandhi can be a better example of our nature of idol worship and ideal shedding.

Gandhi in India was a person, is an ideal and a 'secular' title. People from different religions and castes including people of left ideology use Gandhi surname to project their secular outlook or love for his ideology. To take Gandhi's surname is one type of feeling, while following his ideology is a different matter altogether. Gandhi believed in simplicity and led a simple life. But people of Gandhi surname neither follow his principle of simple living nor shun accumulation of wealth. Several of them have preference for foreign brands contrary to Gandhian ideology of self-sufficiency.

Gandhi believed in minimisation principle which bears importance in the area of ecological conservation. Surviving persons of independence era testify that central government offices used an envelope three times by pasting address on it. But the contemporary national economy unfortunately has embarked upon the principle of 'use and throw' by adopting aggregation as an index of economic growth and development.

Gandhi's economic ideology is based on 'gram swaraj', 'sarvodaya', 'economy of permanence', 'minimisation of technology use' and mobilisation of resources mainly for local use.

Dignity of labour underlies the production mode in Gandhian economic ideology. Unfortunately, the freebies culture has made people lazy, dependent and consumerists. The producer village is transforming into a consumer hub. Wine centres have become part of village culture contrary to Gandhian ideology of prohibition of drinks. The sense of belonging to the community is a tragedy of group conflicts after introduction of party based elections in PRIs. Gandhi's dream of a strong village community emerges slowly and steadily as a dependent weakling.

Production by the masses, not mass production was his economic ideology. So he held the view of less industrialisation. But the present model of national economy is based on large scale, i.e. mass production, industrialisation and use of sophisticated technology.

Not only village, but the whole social system moves away from Gandhian ideology. Gandhi held the ideals of communal harmony, respect to women and worked to remove all the types of social evils. He loved children, but these children are sent to work in hazardous industries as child labour. Nobody can deny that elections are fought in the name of caste, community and religion in practice; though in principle these considerations are against the constitution and Gandhian ideology. Deviation from Gandhian path is evident in incidents of booth-capturing, communal violence, terrorist activities, tempting and intimidating voters. Instances of involvement of politicians, even some legislatures, in corruption, mafia and terrorist activities, accumulation of wealth, murder, rape, incitation of caste and communal violence are normal news items these days.

Gandhi believed in religious (dharma) based politics. He did not distinguish between dharma and politics. To him both are complementary to each other. In his ideological frame all religions are equal. He considers untouchability as a social evil drawing on the ancient religious precepts. Ironically, after enshrining secular ideal in the Constitution in 1976, India witnesses communal violence.

The present trend shows that Gandhi's ideals have not been followed honestly in Independent India. The Congress party boasts as followers of Gandhi, but it was Nehru who favoured large scale industries in place of Gandhian model of village industries. Gandhi had suggested dissolution of the Congress as its objective of formation was over after India attained freedom. But this did not happen. The Congress tag became a brand name for the politicians to take advantage of voters' emotional attachment with it. Ironically, the Congress after independence has been divided into many groups; Nehru's daughter's line however claims to be the original Congress. They take pride of participation in freedom movement and thus showing their importance in Independent India. The contributions of common men and other leaders suffer from an inglorious exist.

It is to be remembered that Gandhi did not encourage his children to enter into politics. He did not promote a hereditary system of politicians in his family. He was a true democrat. But unfortunately, a hereditary system of dynastic rule has emerged as a crucial feature in our democracy. Not only politicians, common people also are far away from his ideals. He preached for the dignity of women. But rape and murder of women happen in our society despite stringent laws against the crime. He emphasised on the importance of mother tongue and national language. However, it is not difficult to find parents taking pride when children speak a market or powerful language. At home most of the parents don't teach or communicate with their children in mother tongue as if it is something ignoble, though they fight for preservation language and culture. What an irony! Sadly, India has not agreed upon a national language yet, and language politics give rise to a host of protest movements in different fields. But our lips do not get tired of invoking the name of Gandhi as Father of the Nation and taking pride to introduce ourselves to foreigners that we are from the Land of Gandhi!

Gandhi is an idea. Gandhi lives if his ideas live. Remembering Gandhi without following his ideas is like organising a 'ritual killing' for the benefit of the performer. To know Gandhi, one has to live up to his ideals. His ideals are so lofty that most of his followers during his time even could not understand. That is why independent India deviated from his ideals and has been a victim of the evils of borrowed ideas. He has been a controversial figure in the country. Some remember him for political gain, some abuse him for not receiving the expected gain, and some others blame him for his failures. One thing is certain that Gandhi lived his time, did his best and people of that time acknowledged it and followed him. Nobody, even not God, can fulfil desires of all people. Greatest good of the greater majority by a person is the greatest contribution. Gandhi did it, and we failed him as we could not inherit his ideals. So, at this juncture, it is not wise to invoke his name for selfish interests, exploit people's sentiment, create controversy and insult his greatness. Gandhi can be respected by saying no to Gandhi by those who do not follow his ideals. Let him live in them who follow his ideas and ideology in true spirit. (Rajiv Gandhi University, Rono Hills, Doimukh, Itanagar,Papum Pare views expressed by the author are his own and in no way the Editor be District,Arunachal Pradesh-791112, Email: mcbehera1959@gmail.com;Theheld responsible for the them—Editor.)

पैक्स गोदाम निर्माण में लगाई गई मिट्टी युक्त बालू

पैक्स गोदाम निर्माण में संवेदक कर रहे हैं मनमानी

हनवारा।

गोड्डा जिले के महागामा प्रखंड अंतर्गत बिहार एवं झारखंड के सीमा स्थित खुर्द डुमरिया एवं काला डुमरिया के बीच खाली मैदान में झारखंड सरकार की ओर से करोड़ो रूपये की लागत से निर्माणाधीन पैक्स गोदाम में भारी अनियमितता बरती जा रही हैं । संबंधित पदाधिकारियो की लापारवाही के चलते निर्माणाधीन पैक्स गोदाम के निर्माण कार्यो मे संवेदक की ओर से इस कदर मनमाने तरीके से घटिया सामाग्री का इस्तेमाल किया गया है कि मानो जिले के सभी शासन और प्रशासन सहित संबंधित विभागीय पदाधिकारी को संवेदक ने अपने मुट्ठी मे रखा हो। स्थानीय लोगो की मानें तो संवेदक के दबंग रवैये के कारण अपना नाम नही छापने के शर्तो पर बताया गया कि पैक्स गोदाम निर्माण कार्य शुरू करने से पूर्व सर्वप्रथम संवेदक काला डुमरिया गांव के एक असमाजिक व्यक्ति से सांठ-गांठ करके विधायक निधि से उस मैदान परिसर में बना सार्वजनिक गौर-मंडली को चारो तरफ ईंट का दीवार देकर उसे पूरी तरह से बंद कर उसपर अपना कब्जा कर लिया।पैक्स गोदाम निर्माण कार्यो मे इस्तेमाल होने वाला सामाग्री ईट, सीमेंट,छड़ सहित अन्य समानो को रखने के साथ-साथ उसमे संवेदक का मुन्सी रहना शुरू कर दिया। स्थानीय लोगो द्वारा इसका विरोध करने पर संवेदक एवं संवेदक का मुन्सी बड़े बड़े राजनीतिक दल के नेताओ से पहुंच एवं पकड होने का बात कहकर ग्रामीणो को धमकियां देकर भयभीत कर दिया। संवेदक के मुन्सी की धमकियां के वजह से कानूनी दांवपेंच में फंसने के चलते स्थानीय ग्रामीण ने निर्माण कार्यो का विरोध करने से परहेज कर लिया।यही वजह है।कि करोड़ो रूपये की लागत से निर्माणाधीन पैक्स गोदाम निर्माण कार्यो मे काफी निम्न स्तर का घटिया सामाग्री का इस्तेमाल करते हुए भारी पैमाने पर गडबड़झाला किया जा रहा है।स्थानीय लोगो की माने तो कोई भी विभागीय सरकारी काम शुरू करने से पूर्व उस कार्यस्थल पर बोर्ड लगाया जाता है।ताकि आम जनमानस को यह पता चल सके कि कितने रूपये की लागत से निर्माण कार्य पूरा किया जाना है।इसके बावजूद भी इतने बडे पैमाने पर निर्माणाधीन पैक्स गोदाम निर्माण कार्य प्रारंभ करने से पूर्व अबतक पैक्स गोदाम निर्माण कार्य से संबंधित किसी प्रकार का बोर्ड नही लगाया गया।जबकि पैक्स गोदाम निर्माण कार्य अंतिम मुकाम तक पहुंचने के करीब है।इसके बावजूद भी कार्यस्थल पर किसी प्रकार का बोर्ड नही लगाया गया है।यहीं बजह है कि संवेदक किसी प्रकार का भय किए बगैर निर्भीक होकर करोड़ो रूपये की लागत से निर्माणाधीन पैक्स गोदाम निर्माण कार्यो मे प्राकलन सामाग्री को नजर-अंदाज करते हुए काफी निम्न स्तर के घटिया सामाग्री का इस्तेमाल किया जा रहा है।यदि इस निर्माण कार्यो का एक विशेष जांच टीम गठित कर निष्पक्ष जांच कराया जाए तो निर्माणाधीन पैक्स गोदाम में भारी पैमाने पर लूट-खसोट का मामला उभर कर सामने आएगा।वही इस क्षेत्र के बुद्धिजीवियो ने गोड्डा उपायुक्त से मामले को संज्ञान मे लेते हुए निर्माणाधीन पैक्स गोदाम का यथाशीघ्र जांच कराने का मांग किया है।

प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी की अध्यक्षता में मासिक-सह- समीक्षात्मक बैठक आयोजित

जसीडीह। प्रभारी द्वारा बैठक का प्रारंभ किया गया। सर्वप्रथम कुष्ठ कार्यक्रम का एलसीडीसी से संबंधित बीएलटीएफ का तिथि निर्धारण करने का निर्देश भादो पुजार को दिया गया साथ ही सभी नये रोगियों की जानकारी ली गई। यक्ष का आगामी कार्यक्रम का जानकारी लिया गया साथ ही निश्चय पोर्टल में सभी रोगियों को ऑनलाइन करने का दिशा निर्देश दिया गया! भी०बी०डी० से संबंधित आई आर एस स्प्रे की जानकारी लिया गया साथ ही एम०एम०डी०पी० वितरण करने का निर्देश दिया गया! महोदय द्वारा ए०आर०वी० वैक्सीन एवं एंटी स्नेक वैक्सीन दोनों अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया! महोदय द्वारा कार्यालय लिपिक को निर्देश दिया गया सेवानिवृत हो रहे सभी कर्मचारियों का सेवा पुस्तक अद्यतन कर लेना है!! महोदय द्वारा लैब में सामान्य पैथोलॉजी का 36 तरह का जांच करने का निर्देश दिया गया जिसका सभी तरह तैयारी कर लेना है!

माथा टेक मंदिर की पैड़ी (सीढ़ी) पर जरूर बैठे कुछ देर:ज्योतिषाचार्य पंडित कृष्ण मेहता

बड़े बुजुर्ग कहते हैं कि जब भी किसी मंदिर में दर्शन के लिए जाएं तो दर्शन करने के बाद बाहर आकर मंदिर की पेडी या ऑटले पर थोड़ी देर बैठते हैं। क्या आप जानते हैं इस परंपरा का क्या कारण है?

ज्योतिषाचार्य पंडित कृष्ण मेहता ने बताया कि आजकल तो लोग मंदिर की पैड़ी पर बैठकर अपने घर की व्यापार की राजनीति की चर्चा करते हैं परंतु यह प्राचीन परंपरा एक विशेष उद्देश्य के लिए बनाई गई। वास्तव में मंदिर की पैड़ी पर बैठ कर के हमें एक श्लोक बोलना चाहिए। यह श्लोक आजकल के लोग भूल गए हैं।

आप इस श्लोक को सुनें और आने वाली पीढ़ी को भी इसे बताएं।

यह श्लोक इस प्रकार है –

अनायासेन मरणम ,बिना देन्येन जीवनम्।देहान्त तव सानिध्यम, देहि मे परमेश्वरम ।।

ज्योतिषाचार्य पंडित कृष्ण मेहता ने बताया कि इस श्लोक का अर्थ है–

अनायासेन मरणम् अर्थात बिना तकलीफ के हमारी मृत्यु हो और हम कभी भी बीमार होकर बिस्तर पर पड़े पड़े, कष्ट उठाकर मृत्यु को प्राप्त ना हो चलते फिरते ही हमारे प्राण निकल जाएं।

ज्योतिषाचार्य पंडित कृष्ण मेहता ने बताया कि बिना देन्येन जीवनम् अर्थात परवशता का जीवन ना हो मतलब हमें कभी किसी के सहारे ना पड़े रहना पड़े। जैसे कि लकवा हो जाने पर व्यक्ति दूसरे पर आश्रित हो जाता है वैसे परवश या बेबस ना हो। ठाकुर जी की कृपा से बिना भीख के ही जीवन बसर हो सके।

देहांते तव सानिध्यम अर्थात जब भी मृत्यु हो तब भगवान के सम्मुख हो।जैसे भीष्म पितामह की मृत्यु के समय स्वयं ठाकुर जी उनके सम्मुख जाकर खड़े हो गए। उनके दर्शन करते हुए प्राण निकले।

देहि में परमेशवरम् हे परमेश्वर ऐसा वरदान हमें देना।

यह प्रार्थना करें गाड़ी, लाडी, लड़का, लड़की, पति, पत्नी, घर धन यह नहीं मांगना है यह तो भगवान आप की पात्रता के हिसाब से खुद आपको देते हैं। इसीलिए दर्शन करने के बाद बैठकर यह प्रार्थना अवश्य करनी चाहिए।

ज्योतिषाचार्य पंडित कृष्ण मेहता ने बताया कि यह प्रार्थना है, याचना नहीं है। याचना सांसारिक पदार्थों के लिए होती है जैसे कि घर, व्यापार, नौकरी, पुत्र, पुत्री, सांसारिक सुख, धन या अन्य बातों के लिए जो मांग की जाती है वह याचना है वह भीख है।

हम प्रार्थना करते हैं प्रार्थना का विशेष अर्थ होता है अर्थात विशिष्ट, श्रेष्ठ। अर्थना अर्थात निवेदन। ठाकुर जी से प्रार्थना करें और प्रार्थना क्या करना है, यह श्लोक बोलना है।

● सब से जरूरी बात:

ज्योतिषाचार्य पंडित कृष्ण मेहता ने बताया कि जब हम मंदिर में दर्शन करने जाते हैं तो खुली आंखों से भगवान को देखना चाहिए, निहारना चाहिए। उनके दर्शन करना चाहिए। कुछ लोग वहां आंखें बंद करके खड़े रहते हैं। आंखें बंद क्यों करना हम तो दर्शन करने आए हैं। भगवान के स्वरूप का, श्री चरणों का, मुखारविंद का, श्रंगार का, संपूर्णानंद लें। आंखों में भर ले स्वरूप को। दर्शन करें और दर्शन के बाद जब बाहर आकर बैठे तब नेत्र बंद करके जो दर्शन किए हैं उस स्वरूप का ध्यान करें। मंदिर में नेत्र नहीं बंद करना।ज्योतिषाचार्य पंडित कृष्ण मेहता ने बताया कि बाहर आने के बाद पैड़ी पर बैठकर जब ठाकुर जी का ध्यान करें तब नेत्र बंद करें और अगर ठाकुर जी का स्वरूप ध्यान में नहीं आए तो दोबारा मंदिर में जाएं और भगवान का दर्शन करें। नेत्रों को बंद करने के पश्चात उपरोक्त श्लोक का पाठ करें।

मन्त्र अर्थ से अधिक भाव प्रधान है।

यहीं शास्त्र हैं यहीं बड़े बुजुर्गो का कहना हैं।

मार्ग-दर्शन

क्रोध को क्षमा के जरिये काबू में लाए

क्या आपको गुस्सा बहुत आता है? ज्यादातर लोगों का जवाब रहता है, 'हां'। आजकल किसी को कम गुस्सा आता ही नहीं है। हां, प्रदर्शन में उसकी तीव्रता कम-ज्यादा हो सकती है। लोग क्रोध कम करने के लिए अनेक प्रयास करते हैं। सबसे सरल तरीका है योग। प्राणायाम द्वारा क्रोध नियंत्रित होता है, लेकिन फिर समय की दिक्कत है। अगर ऐसा है तो एक बात का अभ्यास बढ़ा दीजिए। हमारी बहुत सी आदतों की तरह क्रोध भी आदत ही है। चलिए, आदत से आदत को मारें। अपने भीतर क्षमा करने की आदत विकसित करें। क्षमा करने का यह मतलब नहीं है कि आप कमजोर बन जाएं और क्षमा करते समय खुद को लाचार समझें। क्षमा को मजबूरी के रूप में न लें। ध्यान रखिएगा, क्षमा वही लोग कर सकते हैं जो भीतर से बहुत मजबूत होते हैं। प्रयोग करें, जिन परिस्थितियों में आप सामने वाले पर क्रोधित हो सकते हैं, उसकी गलती पर आवेश व्यक्त कर सकते हैं, उन परिस्थितियों में क्षमा कर दें। क्षमा एक टाइम गेप है। इस दौरान आप स्वयं का और सामने वाले का मूल्यांकन कर पाएंगे। उसकी जिस गलती पर गुस्सा आया था, उसे आप दूसरे रचनात्मक तरीके से दूर कर पाएंगे। क्षमा करके आप एक अच्छा व्यवसाय कर रहे हैं। नुकसान कोई नहीं उठाना चाहता। सामने वाला क्रोध करके नुकसान उठा चुका है। आप क्षमा करके फायदा उठा रहे हैं। क्षमा करने की आदत आपके भीतर बड़प्पन लाएगी और बड़प्पन में बहुत बड़ा संतोष है।

जीने की राह

जीवन-मूल्य देते हैं व्यक्ति को महत्व

बात अमेरिका की है। खचाखच भरे एक सभागृह में एक प्रतिष्ठित वक्ता ने प्रवेश किया। वे मानव मूल्यों को लेकर व्याख्यान देने वाले थे। उनके प्रेरक भाषणों की बड़ी ख्याति थी। पर उन्होंने भाषण शुरू करने की बजाय अपने हाथ में सौ डॉलर का एक नोट दिखाया और पूछा, 'इसे कौन लेना चाहेगा?' उनके इस प्रश्न पर सभागार में सारे हाथ ऊपर उठ गए। फिर वक्ता ने नोट को हाथों में मसला और पूछा, 'अब इस नोट को कौन लेना चाहेगा?' इस बार भी बहुत सारे हाथ ऊपर उठे। उन्होंने कहा, 'मैं यह नोट आपको दूंगा पर मुझे जरा इसके साथ यह करने दीजिए।' ऐसा करके उन्होंने डॉलर के उस नोट को जमीन पर पटक दिया और उसे हाथों से जमीन पर मसल दिया। अब वह मुड़ा-तुड़ा नोट मैला भी हो गया। उसकी मूल चमक चली गई थी, लेकिन था फिर भी वह सौ डॉलर का नोट। वक्ता ने प्रश्न फिर दोहराया, 'इस मैले-कुचले नोट को कौन लेना चाहेगा? सभागृह में अब भी कई थे, जो वह नोट लेने के लिए उत्सुक थे। यह देखने के बाद वक्ता बोले, 'मेरे प्रिय मित्रो, मैंने नोट के साथ चाहे जो किया हो, लेकिन आप इसे लेने के लिए फिर भी उत्सुक थे। ऐसा इसलिए है क्योंकि इसकी हालत चाहे जो भी हो जाए, इसकी कीमत नहीं गिरती। यह सौ डॉलर का नोट ही रहता है। इसी तरह जीवन में भी अपने फैसलों या परिस्थितियों के कारण हम कुचले जाते हैं। अपनी चमक खो देते हैं। हमें लगता है कि हमारा कोई मूल्य नहीं है। हम अहमियत खो बैठे हैं। लेकिन याद रखिए आप के साथ चाहे जो हो आप अपना मूल्य नहीं खोते। आपकी हैसियत आप जीवन में क्या करते हैं या आप किसे जानते हैं, इससे तय नहीं होती बल्कि इससे तय होती है कि आप क्या हैं और आपके जीवन-मूल्य क्या हैं।'

कांग्रेस हाई कमान का ज़्यों बदला मिज़ाज

कर्नाटक की जीत कांग्रेस के लिए करिश्माई साबित हुई है। कुछ महीने पहले कांग्रेस ने बीजेपी से हिमाचल प्रदेश की सत्ता भी छीनी थी, लेकिन दक्षिण भारत में उसका एकमात्र दुर्ग ध्वस्त करने के बाद तो देश की सबसे पुरानी पार्टी का आत्मविश्वास सातवें आसमान पर नजर आ रहा है। आलाकमान को आंखें दिखाने वाले क्षत्रपों को उनकी सीमाएं बताने का काम शुरू हो चुका है। अगले लोकसभा चुनाव के मद्देनजर जिस विपक्षी एकता की खातिर बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार को वार्ताकार बनाया था, अब उसे कांग्रेस अपनी शर्तों पर ही करने के मूड में है।

जीत ने क्या बदला

-कर्नाटक की जीत के बाद कांग्रेस को विश्वास हो गया है कि हिमाचल प्रदेश में मिली जीत तुक्का नहीं थी। खुद को विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बताने वाली बीजेपी से चंद महीनों के अंदर दो राज्यों की सत्ता छीनने के बाद कांग्रेस को चुनावी जीत का फॉर्म्युला और आत्मविश्वास मिल गया है।

-पार्टी को लग रहा है कि सीमित संसाधनों के बावजूद वह स्थानीय नेतृत्व और मुद्दों के सहारे लोक लुभावन वायदों से बीजेपी को मात दे सकती है। उसका यह डर दूर हो गया है कि विरोधी वोटों के बंटवारे का लाभ उठा कर बीजेपी हर बार बाजी मार सकती है।

-कर्नाटक में पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा और पूर्व मुख्यमंत्री एचडी कुमारस्वामी का जनता दल सेक्युलर भी सत्ता की दावेदारी के साथ चुनाव मैदान में था ही, लेकिन मतदाताओं ने उस स्वयंभू किंगमेकर को लगभग अप्रासंगिक बना दिया।

-यह कर्नाटक में मिली शानदार जीत का ही परिणाम है कि अपने मुख्यमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह में कांग्रेस ने विपक्ष के तीन मुख्यमंत्रियों- दिल्ली के अरविंद केजरीवाल, तेलंगाना के के.चंद्रशेखर राव और पंजाब के भगवंत मान को बुलाया तक नहीं, जबकि तमाम विपक्षी दलों के नेता वहां आमंत्रित थे।

बेशक, केसीआर और केजरीवाल के प्रति कांग्रेस की नापसंदगी किसी से छिपी नहीं है और यह एकतरफा भी नहीं है। अतीत में केसीआर और केजरीवाल जो विपक्षी एकता की खिचड़ी पकाते रहे हैं, उसमें कांग्रेस के लिए कोई जगह नहीं थी। अब जबकि हिमाचल और कर्नाटक की जीत

आलाकमान को आंखें दिखाने वाले क्षत्रपों को उनकी सीमाएं बताने का काम शुरू हो चुका है। अगले लोकसभा चुनाव के मद्देनजर जिस विपक्षी एकता की खातिर बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार को वार्ताकार बनाया था, अब उसे कांग्रेस अपनी शर्तों पर ही करने के मूड में है।

ने कांग्रेस के आत्मविश्वास को पंख लगा दिए हैं, वह उन्हें उनकी ही शैली में जवाब देने से नहीं चूकना चाहती। कांग्रेस के इस व्यवहार से विपक्षी एकता को जो नुकसान हो सकता है, उसे न्यूनतम रखने के लिए नीतीश कुमार अगले दिन दिल्ली आकर आप के संयोजक केजरीवाल से मिले। केंद्र की बीजेपी सरकार से निरंतर टकराव के बीच केजरीवाल अफसरों की तैनाती का सुप्रीम कोर्ट से मिला अधिकार भी अध्यादेश द्वारा छीन लिए जाने के संकट से रूबरू हैं। अपने स्वभाव के विपरीत वह अब भी कांग्रेस से सहयोग के इच्छुक हैं। हालांकि इसकी असली वजह राज्यसभा में अध्यादेश का रास्ता रोकने के लिए कांग्रेस के समर्थन की जरूरत है। सत्ता के खेल की पुरानी खिलाड़ी कांग्रेस भी समझती है कि ऊंट मुश्किल से ही पहाड़ के नीचे आया है। इसलिए दिल्ली-पंजाब के नेताओं से चर्चा के बहाने उसने अभी तक पत्ते नहीं खोले हैं।

कांग्रेस आलाकमान का यह आत्मविश्वास क्षेत्रीय दलों ही नहीं, अपने क्षत्रपों से व्यवहार में भी झलक रहा है। पिछले साल की ही बात है, जब कांग्रेस का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने जा रहे अशोक गहलोत की जगह मुख्यमंत्री के चयन के लिए राजस्थान गए पार्टी पर्यवेक्षकों द्वारा बुलाई गई विधायक दल की बैठक में अधिकांश विधायक पहुंचे ही नहीं, बल्कि सचिन पायलट के विरुद्ध दबाव की राजनीति करते हुए अपने इस्तीफे विधानसभा अध्यक्ष को भिजवा दिए।

137 साल पुरानी कांग्रेस के इतिहास में आलाकमान की अवहेलना की वह अभूतपूर्व घटना थी, लेकिन फिर भी पार्टी नेतृत्व गहलोत के बजाय मल्लिकार्जुन खरगे को राष्ट्रीय अध्यक्ष बनवाने से ज्यादा कुछ नहीं कर सका। जिन पर्यवेक्षकों द्वारा बुलाई गई बैठक का गहलोत समर्थक विधायकों ने बहिष्कार किया था, उनमें खरगे भी शामिल थे।

याद रहे कि वर्ष 2020 में कोरोना काल में ज्योतिरादित्य सिंधिया की बगावत से मध्य प्रदेश में कांग्रेस सरकार गिरने के बाद वैसे ही हालात राजस्थान में भी बन रहे थे, लेकिन राहुल-प्रियंका के आश्वासन पर पायलट मान गए। उस आश्वासन पर अमल हो पाता तो शायद पायलट को अपनी ही सरकार के विरुद्ध पहले अनशन और फिर जन संघर्ष यात्रा नहीं करनी पड़ती। बहरहाल, वह कमजोरी अब अतीत की बात लगने लगी है। कांग्रेस हिमाचल और कर्नाटक की जीतों से सबक लेकर आगे बढ़ रही है।

-उसने समझ लिया है कि स्थानीय मुद्दों पर मुखरता, पार्टी में एकजुटता और रेवड़ियां जीत की कुंजी हैं।

-इसलिए गहलोत और पायलट को दिल्ली तलब कर एकता का निर्देश देने में देर नहीं लगाई।

-राजस्थान में एकता का क्या फॉर्म्युला निकाला गया है, यह तो अभी साफ नहीं हुआ है, लेकिन इतना स्पष्ट है कि अकेले गहलोत की मनमानी नहीं चलेगी। मध्य प्रदेश के नेताओं को भी बुला कर समझा दिया गया है।

पार्टी से बड़ा कोई नहीं

छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और स्वास्थ्य मंत्री टी एस सिंहदेव के बीच छत्तीस का आंकड़ा भी गोपनीय नहीं है। कांग्रेस में गुटबाजी कितनी गहरी है, इसका एक बड़ा उदाहरण हरियाणा भी है, जहां पिछले नौ साल से प्रदेश संगठन नहीं बन पाया है। जबकि इस अवधि में दो लोकसभा और दो विधानसभा चुनाव हो चुके हैं। अब आत्मविश्वास से लबरेज आलाकमान का संदेश स्पष्ट है : पार्टी से बड़ा कोई नहीं है, सबको पार्टी हित में साथ मिल कर चलना होगा।

आखिर टूट गया गतिरोध

अमेरिका में राष्ट्रपति जो बाइडन और स्पीकर केविन मैकार्थी के बीच बनी सहमति के अनुरूप पहले निचले सदन (हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स) ने और फिर ऊपरी सदन (सीनेट) ने कर्ज सीमा समाप्त करने का प्रस्ताव पारित कर दिया, जिससे दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था पर मंडरा रहा डिफॉल्टिंग का संकट टल गया है। कर्ज सीमा समाप्त होने को लेकर विशेषज्ञों ने सोमवार 5 जून की जो डेडलाइन बताई थी, उसमें अभी भी दो दिन का वक्त है। लिहाजा, वैश्विक वित्तीय बाजार चैन की सांस ले सकता है।

हालांकि न तो अमेरिका में विधायिका और कार्यपालिका के बीच इस तरह की तनातनी कोई नई बात है और न ही इसका आखिरी पलों में आकर हल होना। लेकिन ऐसा तभी होता है जब विधायिका में विपक्ष बहुमत में होता है और वह ऐसे मौकों का इस्तेमाल करते हुए सरकार को दबाव में लाकर अपनी कुछ बातें मनवाना चाहता है। वरना अक्सर यह सीमा बिना किसी शोर-शराबे और हील-हुज्जत के बढ़ाई जाती रही है। 1960 के बाद से अब तक यह 78 बार एडजस्ट की जा चुकी है। मगर

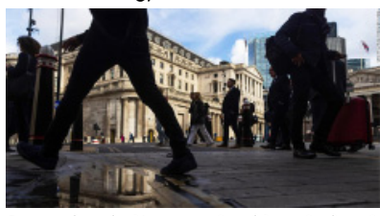

विवाद के मौकों पर कड़ी सौदेबाजी के भी उदाहरण हैं। इस बार भी दोनों पक्षों के बीच तगड़ी सौदेबाजी हुई और जैसा कि राष्ट्रपति बाइडन ने कहा भी कि ऐसे मामलों में किसी भी पक्ष को सौ फीसदी हासिल नहीं होता। दोनों पक्ष थोड़ा-थोड़ा झुके तभी बीच की यह राह निकली, जिसे लेकर सांसदों का एक अति दक्षिणपंथी खेमा नाराज भी रहा। लेकिन उसके विरोध के बावजूद बिल पास होने में कोई बाधा नहीं आई। पिछले कम से कम एक पखवाड़े से यह मुद्दा वैश्विक स्तर पर चर्चा में था और इसी वजह से पिछले महीने राष्ट्रपति बाइडन को ऑस्ट्रेलिया में प्रस्तावित क्वॉड देशों की बैठक में शामिल होने का कार्यक्रम भी टालना पड़ा। हालांकि सभी विशेषज्ञ इस बात पर करीब-करीब एकमत थे कि गतिरोध दूर होना ही है, लेकिन फिर भी इसमें हो रही देरी पर अगर धड़कनें तेज होती जा रही थीं तो उसकी वजह यह थी कि इस अनिश्चितता के प्रभाव सिर्फ अमेरिका तक सीमित नहीं रहने वाले थे। भारत जैसे तमाम देश इसके प्रभाव की जद में आ रहे थे। ग्लोबल फाइनैंशल सिस्टम में अमेरिकी कर्ज बाजार और करंसी की अहम भूमिका को ध्यान में रखें तो यह स्वाभाविक था।

आज दुनिया के विदेशी मुद्रा भंडार का 58 फीसदी डॉलर में है। दूसरे नंबर पर यूरो (20 फीसदी) आता है। ये रिजर्व अमेरिकी सिक्यॉरिटीज में लगाए जाते हैं, जिनमें से बहुत सारे सेफ असेट का मानक तय करते हैं। अमेरिकी डेट सिस्टम में विभिन्न देशों के निवेश का स्तर देखते हुए इस तरह की अनिश्चितता वैश्विक वित्तीय स्थिरता के लिए खतरा बन जाती है। हालांकि फिलहाल इसका कोई इलाज भी नहीं है। दूसरे नंबर की इकॉनमी चीन है जो ट्रस्ट के मामले में बहुत पीछे है। यानी अभी दुनिया को समय-समय पर आने वाली ऐसी अनिश्चितता के लिए तैयार रहना होगा।

सावधान! 'मोबाइल बम' से खेल रहे बच्चे, इतना गुस्सा कैसे कि भाई-बहन कर रहे एक-दूसरे की हत्या

एक हफ्ते के भीतर फरीदाबाद से दो मिलती-जुलती घटनाएं सामने आई हैं। हत्या के ये दोनों मामले दिल दहला देने वाले हैं। पहले मामले में भाई बहन का हत्यारा बना। दूसरे में बहन के हाथ भाई के खून से सने। हत्या के इन दोनों मामलों में कारण मोबाइल था। इसे 'ट्रेंड' कहना तो जल्दबाजी होगी। लेकिन, यह बच्चों की बदलती मानसिकता के संकेत जरूर देता है। भाई-बहन का सिर्फ मोबाइल के लिए एक-दूसरे की हत्या कर देना साधारण बात नहीं है। यह बच्चों में बढ़ती संवेदनहीनता को दर्शाता है। इससे यह भी पता चलता है कि बच्चों को मोबाइल संस्कारों से दूर ले जाकर हिंसक बना रहा है। यह चिंता पैदा करता है। ये बच्चे हमारे-आपके बच्चों से अलग नहीं हैं। न इनके हाथों में जो मोबाइल है वह किसी और दुनिया से बनकर आया था। दोनों ही मामले में बच्चे किशोर हैं। मोबाइल ने इन बच्चों के चारों ओर एक सामानांतर दुनिया बना दी है। इसमें वे असल और वर्चुअल का फर्क तक भूलते जा रहे हैं। यह बच्चों की पैरेंटिंग पर भी सवाल खड़े करता है। बच्चे मोबाइल के इस कदर लती कैसे बन रहे हैं। क्यों इनके हाथ में बचपन से ही 'मोबाइल बम' थमाए जा रहे हैं।

कुछ दिनों पहले फरीदाबाद के ओम एन्क्लेव पार्ट-दो में एक युवती का शव मिला था। तफ्तीश में पता चला था कि भाई ने अपनी बड़ी बहन की गला और मुंह दबाकर हत्या कर दी थी। बहन दिल्ली के करोलबाग में एक शिक्षण संस्थान से सीए और सीएस की परीक्षा की तैयारी कर रही थी। हत्या के बाद से भाई फरार हो गया। शुरुआती जांच में सामने आया कि मोबाइल का ज्यादा इस्तेमाल करने पर बहन अपने भाई को डांटती थी। इसी कारण भाई ने बहन की हत्या कर दी।

अब फरीदाबाद से ही इसी से मिलता-जुलता एक और मामला सामने आया है। गेम खेलने के लिए मोबाइल न देने पर 10वीं की छात्रा ने 12 साल के भाई की हत्या कर दी। किशोरी ने पुलिस को बताया है कि माता-पिता भाई को ही ज्यादा समय के लिए मोबाइल देते थे। इसलिए गुस्साकर उसने यह कदम उठाया।

पिछले साल मोबाइल फोन पर ऑनलाइन गेम खेलने के लिए एक किशोर के अपने छोटे भाई का कत्ल करने की खबर आई थी। यह घटना गुजरात की थी। ऐसे न जाने और कितने मामले पिछले कुछ समय में देखने में आए हैं। आखिर मोबाइल में ऐसा क्या है जो बच्चे इस कदर लती हो गए हैं कि अपने सगे भाई-बहन को नहीं देख रहे हैं। उनके सिर पर यह किस तरह का जुनून सवार है। एक लेवल पर आकर वे माता-पिता के काबू से भी बाहर हो जाते हैं।

रिसर्च फर्म रेडसीर की स्टडी के अनुसार, 2026 तक भारत में गेमिंग सेक्टर की वैल्यू 7 अरब डॉलर (करीब 57,000 करोड़ रुपये) के आसपास हो जाएगी। यानी यह एक बड़ा कारोबार है। ऑनलाइन गेमिंग फर्म इस पर जमकर इनवेस्ट कर रही हैं। परफेक्शन की इस कोशिश में रियल और वर्चुअल के अंतर को खत्म किया जा रहा है। यानी पूरा जोर इस बात पर है कि वर्चुअल को ज्यादा से ज्यादा रियल बना दिया जाए। अब तक सरकार भी इन ऑनलाइन गेम्स प्रभावी कानून बना पाने में कामयाब नहीं हुई है। हालांकि, इसका खामियाजा जरूर दिख रहा है। बच्चे इन गेम्स के लती बन रहे हैं। यह जुनून इस कदर है कि वे बागी बनते जा रहे हैं।

हालांकि, यह भी सच है कि इन बच्चों के हाथों में 'मोबाइल बम' थमाने वाला भी कोई और नहीं पैरेंट्स ही होते हैं। महानगरों में कमोबेश यह ट्रेंड है जहां पति-पत्नी दोनों काम करते हैं। कभी सहूलियत तो कभी चिकचिक से बचने के लिए वे बच्चों के हाथों में खुद मोबाइल दे देते हैं। कोरोना के दौर से तो पढ़ाई के नाम पर हर बच्चे के हाथ में मोबाइल फोन आ गया। बच्चों का मोबाइल पर स्क्रीन टाइम बढ़ गया। यह बच्चों को न सिर्फ आलसी बना रहा है, बल्कि उनके लिए एक फंतासी दुनिया गढ़ रहा है। बच्चे इस फंतासी दुनिया में जितना डूबते हैं, वास्तविकता उनसे उतनी ही दूर चली जाती है। ऐसे में सिर्फ बच्चों को गलत ठहरा देना सही नहीं है। वाकई हमें स्थितियों को बदलना है तो बच्चों को समय देना होगा। बच्चों से जुड़ना होगा। उन्हें रियल और वर्चुअल दुनिया के बीच अंतर को समझाना होगा।

दैनिक पंचांग

04 जून 2023 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	वृष में	मिथुन	06.03 बजे से
चंद्र	वृश्चिक में	कर्क	08.17 बजे से
मंगल	कर्क में	सिंह	10.33 बजे से
बुध	मेष में	कन्या	12.45 बजे से
गुरु	मेष में	तुला	14.56 बजे से
शुक्र	कर्क में	वृश्चिक	17.10 ब.से
शनि	कुंभ में	धनु	19.26 बजे से
राहु	मेष में	मकर	21.31 बजे से
केतु	तुला में	कुंभ	23.18 बजे से
राहुकाल 4.30 से 6.00 बजे तक		मीन	00.51 बजे से
		मेष	02.21 बजे से
		वृष	04.01 बजे से

रविवार 2023 वर्ष का 155 वां दिन
दिशाशूल पश्चिम **ऋतु** ग्रीष्म।
वक्रम संवत् 2080 **शक संवत्** 1945
मास ज्येष्ठ **पक्ष** शुक्ल
तिथि पूर्णिमा 09.12 बजे को समाप्त।
नक्षत्र ज्येष्ठा 03.23 बजे रात्र को समाप्त। **योग** सिद्ध 11.58 बजे को समाप्त। **करण** बव 09.12 बजे तदनन्तर बालव 19.58 बजे को समाप्त। **चन्द्रायु** 15.3 घण्टे
रवि क्रान्ति उत्तर 22° 23'
सूर्य उत्तरायन
कलि अहर्गण 1871634
जूलियन दिन 2460099.5
कलियुग संवत् 5123
कल्पारंभ संवत् 1972949123
सृष्टि ग्रहारंभ संवत् 1955885123
वीरनिर्वाण संवत् 2549
हिजरी सन् 1444
महीना जिल्काद **तारीख** 15
विशेष देव स्नान पूर्णिमा, कबीरदास जयंती।

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
उद्वेग	05.56 से	07.23 बजे तक	शुभ	05.36 से	07.09 बजे तक
चर	07.23 से	08.51 बजे तक	अमृत	07.09 से	08.41 बजे तक
लाभ	08.51 से	10.18 बजे तक	चर	08.41 से	10.14 बजे तक
अमृत	10.18 से	11.46 बजे तक	रोग	10.14 से	11.46 बजे तक
काल	11.46 से	01.14 बजे तक	काल	11.46 से	01.19 बजे तक
शुभ	01.14 से	02.41 बजे तक	लाभ	01.19 से	02.51 बजे तक
रोग	02.41 से	04.09 बजे तक	उद्वेग	02.51 से	04.24 बजे तक
उद्वेग	04.09 से	05.36 बजे तक	शुभ	04.24 से	05.53 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अत: आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। ■Jagrutidaur.com, Bangalore

आपका राशिफल 04 जून

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): मित्तव्ययता रखें क्योंकि रुपये-पैसों की सुविधा आगे मिले न मिले। व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बना रहेगा। बचते-बचते कलह विवाद का डर बना रहेगा। शुभांक-4-5-7

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): निकटस्थ व्यक्ति का सहयोग काम को गति दिला देगा। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। कामकाज में आ रही बाधा को दूर कर लेंगे। सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बन जाएगी। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। शुभांक-3-5-7

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): कार्यारम्भ से पहले उचित मूल्यांकन कर लें। मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। पर-प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। मेहमानों का आगमन होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभांक-5-7-9

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): ज्ञानीजनों का सानिध्य प्राप्त होगा। आध्यात्मिक वातावरण बनेगा। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। यार-दोस्तों के साथ सांझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। यात्रा का योग बन रहा है। शुभांक-2-6-7

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): विवादों व मुकदमे बाजी से राहत मिलेगी। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। शुभांक-4-6-8

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। अपने आपको अधिक सक्रिय पायेगें। भावनाओं में न बहें, सावधान रहें। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। अवरुद्ध कार्य सम्पन्न होंग। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान्य रहेगी। शुभांक-3-5-7

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। व्यापार में प्रगति होगी। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। धार्मिक स्थलों की यात्रा का योग है। शुभांक-2-4-6

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): कार्यसिद्धि होने में देर नहीं लगेगी। आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा। शैक्षणिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। परिवार में किसी मांगलिक कार्य पर वार्ता होगी। हरि करे सो खरी अत: हानि का कोई भय नहीं, यथावत कार्य जारी रखें। व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। मातृ पक्ष से विशेष लाभ। शुभांक-2-4-7

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): मुंह मांगी मुराद मिलेगी यानि इच्छित फल की प्राप्ति होगी। मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने के प्रयास सफल होंगे। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। शुभांक-3-5-8

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी): स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। बचते-बचते कलह विवाद का डर बना रहेगा। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। शुभांक-3-6-9

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। अपने काम को प्राथमिकता से करें। अर्थपक्ष मजबूत रहेगा। किसी से निकटता प्रेम-प्रसंग में बदलेगी। सलाह उपयोगी सिद्ध होगी। शुभांक-3-5-7

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। शुभांक-5-8-9

प्रसंगत: संगीत का सौंदर्य

फ्रांस के प्रसिद्ध संगीतकार गाल्फर्ड के पास एक लड़की संगीत सीखने आया करती थी जो अत्यंत कुरूप थी। एक दिन लड़की ने गाल्फर्ड को बताया कि जब कभी वह मंच पर जाती है तो सोचने लगती है कि अन्य लड़कियां तो बहुत ही आकर्षक हैं। कहीं लोग उसकी हंसी तो नहीं उड़ाएंगे। इस आशंका से वह ढंग से नहीं गा पाती। लेकिन घर पर अपने लोगों के बीच वह ठीक से गाती है और वहां सभी उसके गायन की प्रशंसा करते हैं। बस मंच पर जाने के समय

आपके व्यक्तित्व के परिचायक हैं आपके वस्त्र

प्राचीन काल से ही वस्त्र मानव के साथ जुड़े हैं। वस्त्र हमारा शरीर ढंकने के साथ हमें मौसम के प्रभाव से भी बचाते हैं। वस्त्र वही होते हैं पर उनको पहनने का तरीका और संभालने का तरीका सभी का भिन्न होता है। इसी कारण लोगों के स्वभाव, व्यक्तित्व और चरित्र को पहचानने में आसानी होती है। रंगों का चयन, पहनावा और कपड़ों की स्थिति भी सामने वाले का स्वभाव व व्यक्तित्व कैसा है, इसे समझने में मदद करते हैं। आइए जानें कि क्या वस्त्र सचमुच व्यक्तित्व और स्वभाव बताने में मददगार हैं।

ब्रांडेड कपड़े : जो लोग हमेशा ब्रांडेड कपड़े पहनते हैं, वे महत्वाकांक्षी होते हैं और सदा ऊपर उठने का प्रयास करते हैं। ऐसे लोग स्वभाव के मूडी होते हैं। ये लोग दूसरों के कामों पर नजर रखते हैं। ऐसे लोगों की दोस्ती अपने स्तर वाले लोगों से होती हैं। यदि वे स्वयं अधिक पैसे वाले नहीं होते तो भी दूसरों पर अपनी अमीरी का प्रभाव छोड़ते हैं। ऐसे लोग अपने सर्कल में अपनी अलग पहचान बनाते हैं। वे प्राय: आत्मसम्मानी होते हैं। अपने आत्मसम्मान के विरोध में कुछ भी सहन नहीं कर सकते। अपने आत्मसम्मान को बचाने के लिए कभी-कभी कुछ गलत भी कर लेते हैं।

ढीले कपड़े : जो लोग थोड़े ढीले वस्त्र पहनते हैं, वे स्वभाव से शांत तथा कोमल होते हैं। दूसरों का अपने अनुभवों से मार्गदर्शन करना उन्हें अच्छा लगता है। ऐसे लोग स्वयं को परिस्थिति के अनुसार आसानी से ढाल लेते हैं। वे दूसरों को भी अपनी तरह सरल स्वभाव वाला समझते हैं और कई बार धोखा भी खा लेते हैं। वे स्वभाव से मिलनसार तथा अंतर्मुखी होते हैं।

ऐसे लोग कला प्रेमी, प्रकृति प्रेमी और सौंदर्य प्रेमी होते हैं। वे प्राय: हंसमुख होते हुए भी गंभीर स्वभाव के होते हैं। वे समय का सदुपयोग करना जानते हैं, नियमानुसार काम करने में विश्वास रखते हैं और जीवन को सुनियोजित ढंग से जीना पसंद करते हैं।

तंग वस्त्र : तंग वस्त्र पहनने वाले लोग चुस्त और फुर्तीले होते हैं। ये लोग कुछ पाने के लिए शार्टकट अपनाते हैं, स्वभाव से निडर, साहसी और बहुमुखी होते हैं। ये लोग दिखावा अधिक करते हैं। हाजिर जवाब होने के साथ-साथ बहस करने में पीछे नहीं रहते।

ऐसे लोग मनमौजी और जिद्दी होते हैं और इन्हें लोगों के बीच रहना अच्छा लगता है। ऐसे लोग कामुक प्रवृत्ति के होते हैं और ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीने में विश्वास करते हैं। चालाकी से पैसा कमाने के नए-नए ढंग ढूंढते हैं।

हैंडलूम वस्त्र : हैंडलूम वस्त्र पहनने वाले ऊंचे विचारों वाले, भावुक और प्रतिभावान होते हैं। स्वभाव से ऐसे लोग शांत, सहनशील और आत्मविश्वासी होते हैं। जिन कामों के लिए संघर्ष करते हैं उनमें वे सफल भी होते हैं। स्वभाव से हमदर्द और दूसरों की मदद करने वाले होते हैं। इनकी सोच दूरदर्शी होती है। अपने हंसमुख स्वभाव के कारण लोगों में प्रिय होते हैं। समय के पक्के और नियमानुसार चलने वाले होते हैं।

ऐसे वस्त्रधारी मान-सम्मान और धन-प्रतिष्ठा में संतुलन बना कर रखते हैं जिनसे दोस्ती होती है उनसे पूरी तरह दोस्ती निभाते हैं, जिनसे नाराज होते हैं उनसे उनकी नाराजगी चेहरे से झलकती है।

ये लोग सफाई पसंद होते हैं और अच्छे मार्गदर्शक भी। दूसरों को कभी नुक्सान नहीं पहुंचाते, न ही दूसरों पर आश्रित रहते हैं। अपने काम स्वयं निपटाने में विश्वास रखते हैं। आध्यात्मिक प्रवृत्ति के होने के साथ-साथ न्यायाप्रिय भी होते हैं।

वस्त्रों को पहनने के तरीके से : सभी लोगों के वस्त्र पहनने और बांधने के तरीके भिन्न होते हैं जैसे कई महिलाएं नाभि दर्शना साड़ी पहनती हैं ते पुरूष पैंट और पाजामा नाभि से नीचे बांधते हैं। इन सबके स्वभाव भिन्न होते हैं। जो महिलाएं और पुरूष नाभि से नीचे कपड़े पहनते हैं जैसे साड़ी, पेटीकोट, सलवार, पैंट, पाजामा आदि ऐसे लोग आत्मविश्वासी और निडर होते हैं और थोड़ा-बहुत जोखिम उठाने में संकोच नहीं करते। स्वभाव से कामुक होते हैं और अपनी मर्जी के मालिक होते हैं। स्वछन्द विचारों वाले होने के कारण लोगों को आसानी से अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। इन्हें भीड़ से अलग दिखना अच्छा लगता है।

नाभि से ऊपर बांधने वाले पुरूष और महिलाएं स्वभाव से चिंतित और व्याकुल होते हैं। वे स्वभाव से भोले भी होते हैं। इनकी पसंद सीमित होती है। वे प्राय: अधिक अनुभवी होते हैं। अपने अनुभवों से दूसरों का मार्गदर्शन करते हैं, दूसरों की सहायता करना इन्हें अच्छा लगता है। जब इन्हें अपनी पसंद का वातावरण नहीं मिलता तो बहुत अकेलापन और स्वयं को असहाय महसूस करते हैं। बड़ों की इज्जत करते हैं और रूढ़िवादी होते हैं। दूसरों के दुख में दुखी होते हैं और अपना दुख भूल जाते हैं।

पनीर स्टफ्ड चिल्ला

सामग्री : १ कप मिक्स दाल (मूंग, चना, अरहर इत्यादि), १ टीस्पून सौंफ पाऊडर, १/४ कप बारीक कटे हरे प्याज, १ छोटा टुकड़ा अदरक कद्दूकस किया हुआ, २ बारीक कटी हरी मिर्च, नमक स्वादानुसार।

स्टफिंग के लिए : २०० ग्राम पनीर कद्दूकस किया हुआ, १-१ टमाटर व शिमला मिर्च बारीक कटे हुए, चाट मसाला व नमक स्वादानुसार।

विधि : दाल को दरदरा पीस लें इसमें सभी सामग्रियां डाल कर मिला लें। नॉनस्टिक पैन को गर्म करके मिश्रण को गोलाई में फैला दें। थोड़ा-सा तेल डाल कर दोनों तरफ से सेंक लें। कटी हुई शिमला मिर्च, टमाटर व पनीर के टुकड़ों में चाट मसाला मिलाएं और इसे चिले में रख कर रोल करें व गरमा-गरम परोसें।

हर युवती के दिलो-दिमाग में अपने साथी को लेकर कोई न कोई तस्वीर जरूर होती है। वे चाहती है कि उनका साथी अत्यंत प्यार करने वाला, खुशमिजाज, जबरदस्त सेंस ऑफ ह्यूमर वाला व आकर्षक व्यक्तित्व वाला हो।

आप बनें अच्छा साथी

आप जिस तरह से अपनी भावी जीवनसंगिनी में खूबियों के होने की उम्मीदें रखते हैं, कुछ वैसी ही उम्मीदें वह भी आपसे रखती है। पर क्या आप कुछ जानते हैं इसके बारे में? शायद आपका जवाब हो नहीं, तो आइए जानिए कुछ खास बातें इस संदर्भ में। हर युवती के दिलो-दिमाग में अपने साथी को लेकर कोई न कोई तस्वीर जरूर होती है। वे चाहती है कि उनका साथी अत्यंत प्यार करने वाला, खुशमिजाज, जबरदस्त सेंस ऑफ ह्यूमर वाला व आकर्षक व्यक्तित्व वाला हो। पर इसके साथ ही कुछ और विशेषताएं भी हैं जो वे चाहती हैं आपसे ऐसा हो जो मेरी परवाह करें और साथ में ईमानदार भी हो।

- ऐसा, जो मेरे साथ हंसे और मेरे साथ रो भी सके, यानी हर समय मेरा साथ निभा सके।
- साथी की बात ध्यान से सुने और यह समझे कि सुनना मुख्य चाबी है, पर क्या सुना है यह भी महत्वपूर्ण है, जाने। जो मेरे कहने से पहले समझ ले कि मैं क्या कहनेवाली हूं।
- जो इज्जत करे और व्यर्थ में परेशान न करे।
- जो खुले दिमाग का हो व समय आने पर दोस्त की तरह मदद करें।
- बीमार मानसिकता का न हो और जाने कि कैसे रिश्तों में सामंज्यस्य कैसे बिठाया जा सकता है।
- जो दिल से चाहे, हर काम को पसंद करे।
- ऐसा हो, जिसके साथ रूचियां शेयर की जा सकें।
- जो जीवनसंगिनी पर विश्वास रखे और उसके लिए अपने जीवन में खतरा भी मोल ले सके।
- जिसके पास बात करने व सुनने का समय हो।
- जिसके पास व्यक्तित्व के साथ-साथ पसंद आने वाली विशेषताएं भी हों, जैसे वह स्वीट, रोमांटिक और खुशमिजाज हो।
- मेरी शरारतों का भी मजा ले, मेरा मजाक न बनाए। जब मैं दुखी होऊं वह मेरे मूड को बदल सके। सिर्फ परफेक्ट होने की उम्मीदें न रखते हुए मैं जैसी भी हूं स्वीकार करें।
- मेरे बनाए खाने की तारीफ करे चाहे, वह स्वादिष्ट न हो पर वह समझे कि मैंने उसे बनाने में कितनी मेहनत की है।
- कभी कुछ ऐसा हुआ हो जिसे मैं सुनना-जानना न भी चाहूं फिर भी वह सच बताए।
- जो अच्छा इंसान व प्यार करने वाला व्यक्ति हो।

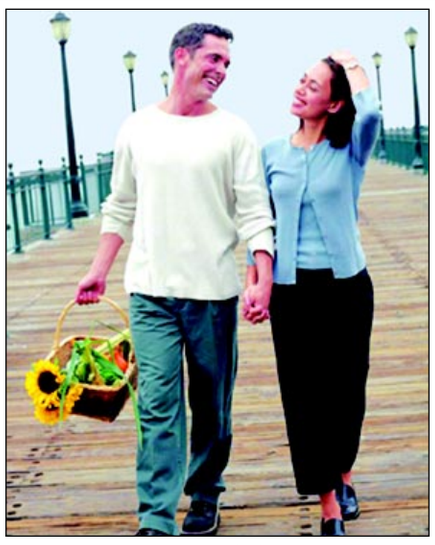

बच्चो के प्रति प्रेम

- बच्चे को प्रश्न पूचने की पूरी छूट दें। प्रश्नों का उत्तर प्यार से और सही दें।
- अपने बेटे/बिटिया को काम करने के लिए प्रोत्साहित करें। काम करने पर उन्हें शाबासी दें। यदि उनसे कुछ गलत हो गया है, तो सही कैसे होगा, सिखाएं।
- प्यार और गुस्सा करने में अपना संतुलन बनाए रखें।
- बच्चे के प्रति प्रेम और लगाव को समय-समय पर प्रदर्शित करते रहें।
- अत्यधिक अपेक्षाएं रखना, अपनी महत्वाकांक्षा बच्चों पर थोपना गलत है।
- बच्चे को कुछ हद तक स्वतंत्र रूप से छोड़ें। इससे उसमें आत्मविश्वास उत्पन्न होगा।
- बच्चे के सामने झूठ बोलने की कोशिश न करें।
- गलती पर डांटें और अच्छे व्यवहार के लिए उपहार दें।
- कई अभिभावकों का व्यवहार भी बच्चों को भ्रमित करता है। वे किसी क्षण बड़े स्नेही, आदर्शवादी प्रतीत होते हैं और बच्चों को बड़ा प्यार-दुलार देते हैं पर दूसरे ही क्षण गुस्से में अपना संयम खो बैठते हैं। ऐसा व्यवहार भी बच्चों में बहुत सी भावनात्मक समस्याएं उत्पन्न करता है।

हेल्थ प्लस

भोजन में रेशे की मात्रा

आहार में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा के साथ फाइबर (रेशा) एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। फाइबर खुद में कोई तत्व नहीं होता, लेकिन यह पौधों से प्राप्त होने वाले खाद्य पदार्थ, का ही एक भाग होता है। फलों के छिलकों और सब्जियों के छिलकों में फाइबर अधिक पाया जाता है, इसीलिए हमारी दादी-नानी अक्सर छिलके सहित फल खाने को कहती हैं। फाइबर में कोई कैलोरी नहीं होती, क्योंकि हमारा शरीर इसे अवशोषित (एब्जोर्ब) नहीं कर पाता, फिर भी हमारे भोजन में फाइबर होना बहुत जरूरी होता है। ये खुराक को पाचक तत्व देते हैं जो बाद में पाचन क्रिया में मदद करते हैं। यदि आप कैलोरी इनटेक कम करना चाहते हैं तो ऐसे पदार्थों का चयन करें जिनमें फाइबर तो अधिक होता है लेकिन फैट कम होता है, जैसे फल और सब्जियां।

स्वास्थ्य पर प्रभाव

आजकल डॉक्टर अक्सर रोगियों को (ब्रान) चोकर खाने को कहते हैं। पुराने समय में हमारी दादी हमें गेहूं पिसवाने भेजती थी, तो यह कहती थी कि 'देखना, कहीं चोकर न छान लें।' दादी को पता था कि चोकर में रेशा अधिक होता है, जो खाने के बाद पाचन प्रक्रिया में मदद करता है।

आजकल ज्यादातर लोग पैक्ड आटा लेते हैं, जिसमें चोकर तो होता ही नहीं, हां मैदा जरूर मिला होता है। और तो और हम लोग गेहूं को बारीक पिसवाकर रोटी बनाते समय बचे हुए चोकर को फेंक देते हैं। हकीकत तो यह है कि चोकर में आटे से ज्यादा स्वास्थ्य रक्षक गुण होते हैं। आजकल तो डॉक्टर भी चोकर सहित आटे की रोटी बनाने को कहते हैं। इसलिए आटे को छानकर चोकर को अलग कर देने की मानसिकता को बदल डालिए। चोकर फाइबर का मुख्य स्रोत है और इसके सेवन से पेट खुलकर साफ होता है (कब्ज नहीं होती) और भोजन के प्रति रूचि भी बढ़ती है। फाइबर युक्त खाद्य पदार्थ खासतौर से चोकर युक्त आटे से बनी रोटियां आंतों की पैरास्टालिक मूवमेंट को बढ़ा देती है। परिणामस्वरूप कब्ज दूर होने लगता है।

फाइबर युक्त खुराक

अघुलनशील-सब्जियां, गेहूं का चोकर, पॉपकोर्न, ब्राउन चावल, भुना चना, छिलके सहित दाल, राजमा, पास्ता, संपूर्ण अनाज।

घुलनशील

सेब (छिलका सहित), अंगूर, संतरा, नाशपाती, राई, जई का आटा, सेम, पलियां, पत्तेदार सब्जियां, जौ।

भोजन में फाइबर ऐसे बढ़ाएं

- जूस की जगह ताजा फलों में रेशा अधिक होता है।
- छिलके सहित फल और सब्जियों का इस्तेमाल करें।
- साबुत दालें, चोकर सहित आटे का उपयोग फायदेमंद है।
- फाइबर इनटेत बढ़ाने के साथ-साथ पानी की मात्रा भी बढ़ाएं।
- अंकुरित दालों, अनाज का सेवन प्रतिदिन करें।
- तेल में पकाने की अपेक्षा अनाज (चना, पॉपकार्न आदि) भून कर खाएं।

गर्दन में दर्द

वर्तमान समय में कम्प्यूटर के बढ़ते इस्तेमाल के कारण गर्दन दर्द का प्रकोप तेजी से बढ़ रह है। अनेक अध्ययनों से पता चला है कि देश के बड़े शहरों एवं महानगरों में कम्प्यूटर के बढ़ते इस्तेमाल के कारण कमर दर्द के साथ-साथ गर्दन दर्द से ग्रस्त लोगों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है।

एक ही मुद्रा में बैठकर देर तक कम्प्यूटर पर काम करते हैं उनमें गर्दन दर्द एवं कमर दर्द की समस्या अधिक होती है। दरअसल एक ही मुद्रा में बैठने से हड्डियों की प्रतिरोधक क्षमता धीरे-धीरे कमजोर पड़ने लगती है, जिसके कारण यह बीमारी जल्दी जोर पकड़ती है।

भारी हैंजबैग से गर्दन दर्द

यदि आपको भारी पर्स या थैला लेकर चलने की आदत है, तो इसे हल्का करने की कोशिश करें, क्योंकि आपके पर्स का भारी वजन आपकी गर्दन पर कहर ढा सकता है। कुछ महिलाएं अपनी सुंदरता बढ़ाने के लिए हाई हील की सैंडिल या चप्पल पहनती हैं और अपने बैग में जरूरत से अधिक फैशन के सामान भर लेती हैं, लेकिन यह फैशन उनकी गर्दन पर भारी पड़ सकता है। भारी बैग के कारण कंधे में सूजन और सख्ती के मामलों में तेजी से वृद्धि हो रही है और इसके इलाज के लिए फिजियोथेरेपिस्ट और मसाज थेरेपिस्ट के यहां भीड़ देखी जा सकती है। एक कंधे पर भारी बैग को टांगने पर सिर कंधे के दूसरी ओर झुक जाता है, जिससे कंधे और गर्दन की मांसपेशियों में जरू रत से अधिक खिंचाव पैदा होता है और मांसपेशियों को अधिक कार्य करना पड़ता है। भारी बड़ा बैग गर्दन और कमर दर्द के साथ-साथ मांसपेशियों में तनाव, बांह में दर्द, गले में जकड़न सिर दर्द और अंगुलियों में झुनझुनी पैदा कर सकता है।

दर्द निवारक गोलियां

कई लोग शुरू में गर्दन दर्द की अनदेखी करते हैं और दर्द बढ़ जाने पर दर्द से छुटकारा पाने के लिए चिकित्सकों से परामर्श किए बगैर दर्द निवारक गोलियों का सेवन करने लगते हैं, लेकिन लंबे समय तक या अधिक मात्रा में इन गोलियों का सेवन नुकसानदायक साबित हो सकता है।

यदि आपको गर्दन दर्द है

- हल्के पदार्थों से बने छोटे पर्स या बैग का इस्तेमाल करें।
- खड़े रहने, बैठने और ड्राइविंग करते समय अपना पोश्चर सही रखें।
- युवावस्था से ही ओस्टियोपोरोसिस से बचने के उपाय करने चाहिए और इसके विटामिन डी युक्त आहार लेना चाहिए।
- यदि आपके कंधे में सूजन, अंगुली में झुनझूनी, गर्दन दर्द, कमर दर्द या सिर दर्द है, तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें, क्योंकि इसका संबंध भारी बोझ ढोने से हो सकता है।

सर्वाइकल डिस्क कॉलर

मरीजों की गर्दन के दर्द से निजात दिलाने के लिए सर्वाइकल डिस्क कॉलर पहनने की सलाह दी जाती है।

ऑपरेशन

मौजूदा समय में माइक्रोडिस्केटोमी जैसी माइक्रोसर्जरी की मदद से डिस्क निकालना आसान हो गया है। माइक्रोसर्जरी की मदद से सबसे पहले गर्दन से खिसके हुए सर्वाइकल डिस्क को निकाल दिया जाता है। उसके बाद खाली स्थान को भरने के लिए हिप यानी कूल्हे की हड्डी इस्तेमाल की जाती है। इस पूरी प्रक्रिया में ४ दिन का समय लगता है।

गर्दन दर्द से बचाव

उम्र बढ़ने पर गर्दन की हड्डी या उसकी डिस्क को कुछ न कुछ क्षति होती ही है और इस कारण हर व्यक्ति को अधिक उम्र होने पर किसी न किसी स्तर पर गर्दन दर्द का सामना करना पड़ता है।

सोने, बैठने और चलने-फिरने के दौरान सही मुद्राएं अपनाकर, गर्दन के व्यायाम करके, शारीरिक वजन पर नियंत्रण रखकर तथा धूम्रपान से परहेज करके गर्दन दर्द से काफी हद तक बचा जा सकता है।

देर तक एक ही अवस्था में बैठने से बचना चाहिए। इसके बावजूद अगर गर्दन दर्द हो जाए, तो सही समय पर सुयोग्य स्पाइन चिकित्सक से इलाज कराना चाहिए।

दांतों की सफाई और निमोनिया

आमतौर से दांतों की ब्रश से सफाई इसलिए की जाती है कि मुंह से बदबू न आए। सांसों में ताजगी बनी रहे और दांत खराब ना हों। लेकिन क्या आप जानते हैं कि दांतों की साफ-सफाई करने से निमोनिया का खतरा भी कम होता है। जी हां, यूनिवर्सिटी ऑफ बफेलों में किए गए एक अध्ययन के अनुसार दांतों के मैल में छिपे कीटाणु सांस के दरिए फेफड़ों में पहुंचकर निमोनिया का कारण बन सकते हैं।

शोधकर्ताओं ने माइक्रोस्कोपिक जांच के दौरान पाया कि दांत के मैल में मौजूद बैक्टीरिया और फेफड़े के फ्लूइड में मौजूद बैक्टीरिया की संरचना जैनेटिक रूप से एक जैसी है। ध्यान देने योग्य बात है कि बैक्टीरिया संरतना में यह समानता सिर्फ उन्हीं मरीजों में थी, जिन्हें निमोनिया का इंफेक्शन दांतों पर जमी मैल (प्लाक) में मैजूद बैक्टीरिया के कारण हुआ था। वैसे दांतों की नियमित साफ-सफाई के जरिए दांतों के मैल और बैक्टीरिया पर काबू पाया जा सकता है।

अत: जब भी आप कुछ खाए या पिएं अच्छी तरह कुल्ला करिए। दिन में हर भोजन के पश्चात दांतों को ब्रश से जरूर साफ करिए ताकि आपके दांत ताउम्र आपका साथ दें और आपकी सांस महकती रहे।

मजबूत हड्डियां या कमजोर दिल

हड्डियों की मजबूती या ओस्टियोपोरोसिस से बचाव के लिए यदि आप कैल्शियम की गोलियां ले रहे हैं, तो एक बार ठहरिए। एक नई स्टडी से पता चला है कि इनसे दिल का दौरा पड़ने का खतरा बढ़ जाता है। शोधकर्ताओं ने पाया कि रजोनिवृत्ति की उम्र में पहुंच चुकी महिलाओं की हड्डियों के कमजोर होने का खतरा होता है और इससे बचने के लिए जो महिलाएं कैल्शियम की गोलियों का सेवन करती है उनमें से लगभग ५० प्रतिशत को दिल का दौरा पड़ने की आशंका अपेक्षाकृत अधिक होती है।

उक्त स्टडी से जुड़े न्यूजीलैंड की ऑकलैड यूनिवर्सिटी के डॉ. इयान रीड के अनुसार दूसरी स्टडी से मिला डेटा भी बताता है कि कैल्शियम के इस्तेमाल से दिल के दौरे पड़ने की आशंका बढ़ती है। डॉ. रीड के अनुसार हो सकता है कि यह प्राथमिक तौर पर अधिक उम्र वाली महिलाओं की समस्या हो, क्योंकि युवाओं की तुलना में उन्हें दिल की बीमारी होने की आशंका अधिक होती है। लिहाजा ७० साल से ज्यादा उम्र की महिलाओं और दिल की बीमारी से पीड़ित महिलाओं को कैल्शियम की पूरक खुराक न दिए जाने की सलाह उचित हैं।

खतरनाक हो सकते हैं नैपी

नन्हें-मुन्नों के गीले पोतड़ों को बदलने के झंझट से छुटकारा दिलाने के लिए आजकल बाजार में तरह-तरह के 'नैपीज' उपलब्ध हैं। जो नुकसानदायक हैं खासकर लड़कों के लिए। इनमें प्राय: प्लास्टिक का उपयोग किया जाता है, ताकि बिस्तर गंदा न हो, भले ही बच्चे के शरीर से मल-मूत्र घंटों चिपका रहे। लेकिन इसी प्लास्टिक की गर्मी से अंडग्रंथियों का तापमान इतना ज्यादा बढ़ जाता है कि अंडग्रंथियों में शुक्राणु बनने की प्रक्रिया धीमी हो जाती है।

जर्मन यूनिवर्सिटी द्वारा किए गए अध्ययन से पता चला है कि विगत ६० वर्षों से विकसित देशों में युवाओं की शुक्राणु संख्या (स्पर्म काउंट) में तेजी से गिरावट आई है। इसका प्रमुख कारण बचपन में नैपी तथा युवावस्था में टाइट अंडरवियर और टाइट जींस पहनना।

शोधकर्ताओं के मुताबिक शुक्राणुओं के सही विकास के लिए अन्य बातों के साथ अनुकूल तापमान का होना जरूरी है। हर हालत में अंड ग्रंथियों का तापमान शरीर के औसत तापमान से कम ही होना चाहिए।

सार्वजनिक आलोचना पर बोले अनुभव सिन्हा मेरा करियर अब तक तीन बार मर चुका है

अनुभव सिन्हा अपनी फिल्म भीड़ को लेकर लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं। यह फिल्म सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। पहले दिन ही बॉक्स ऑफिस पर फिल्म की कमाई धीमी पड़ गई थी। हालांकि, फिल्म की कहानी और कलाकारों की अदाकारी को दर्शकों का प्यार मिल रहा है, लेकिन कमाई के मामले में यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर औंधे मुंह गिर गई है। अब फिल्म निर्माता ने खुले तौर पर बताया है कि कैसे वह सार्वजनिक आलोचना पर प्रतिक्रिया करते हुए कहते हैं कि उनका करियर अब तक तीन बार मर चुका है।

सार्वजनिक आलोचना पर ऐसे प्रतिक्रिया देते हैं अनुभव सिन्हा

हाल ही में, एक इंटरव्यू अपने करियर के बारे में बताते हुए अनुभव सिन्हा कहते हैं कि उन्हें नहीं लगता कि उन्हें कभी सार्वजनिक आलोचना मिली है। निर्देशक ने कहा, सच में मुझे मीडिया और जनता से बहुत प्यार मिला है। कम ही लोग जानते हैं कि मेरा करियर अब तक तीन बार मर चुका है। तुम बिन के बाद मुझे वन-फिल्म वंडर कहा गया और मैं मर गया फिर मैंने दस बनाई जो हिट रही और फिर मैंने कैश बनाया। उस समय मुझे टू-फिल्म वंडर कहा गया और मैं मर गया। फिर मैंने रा.वन बनाई, किसी को फिल्म समझ नहीं आई। किसी को अच्छा लगा तो किसी को बुरा।

करियर में तीन बार मर चुके हैं अनुभव सिन्हा

अनुभव ने आगे कहा, मुझसे ज्यादा लोग शाहरुख खान पर निशाना साध रहे थे। वह लोग उन्हें नीचे लाना चाहते थे और उन्होंने किया। तुम बिन, दस, रा.वन, मुल्क, थप्पड़, अनेक, आर्टिकल 15 और भीड़ जैसी मेरे पास बेहतरीन फिल्में हैं जो लंबी उम्र जिएंगी और मैं अब रिटायर हो सकता हूं।

भीड़ की असफलता पर बोले अनुभव सिन्हा

आगे अनुभव से पूछा गया कि भीड़ ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन क्यों नहीं किया। इसपर निर्देशक ने कहा कि वह समझ नहीं पा रहे हैं कि फिल्म के साथ क्या गलत हुआ। 'अनेक' के साथ ऐसा होना लाजमी था, क्योंकि मैं ऐसे बहुत लोगों को जानता हूं, जो इस फिल्म को समझ नहीं पाए होंगे, लेकिन 'भीड़' तो एक सीधी फिल्म थी। इस फिल्म को आसानी से समझा जा सकता था। मुझे लगता है लगातार तीन सफलताएं मिलने के बाद मैं खराब हो गया हूं।

17 जून से प्रसारित होगा होगा रोहित का शो

रोहित शेट्टी का शो खतरों के खिलाड़ी का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार रहता है। दर्शक इस शो में अपने पसंदीदा कंटेस्टेंट्स को खतरों का आमना सामना करते देखेंगे। यही नहीं, रोहित का यह शो कलर्स के रियलिटी शो टीआरपी लिस्ट में भी हमेशा टॉप पोजीशन पर रहता है। रोहित शेट्टी का मशहूर रिएलिटी शो 'खतरों के खिलाड़ी' का 13वां सीजन लोगों का मनोरंजन करने के लिए पूरी तरह से तैयार है। इसमें दर्शक 14 लोकप्रिय हस्तियों को अपने डर पर जीत हासिल करने के लिए अपने कंफर्ट जोन से बाहर निकलते देखेंगे। रोहित शेट्टी के नेतृत्व वाले शो में भाग लेने वाले निडर प्रतियोगियों का यह शो जल्द ही जून की इस तारीख को ऑन एयर होने वाला है।

टीवी पर जून में आएगा रोहित का शो

रोहित शेट्टी का शो खतरों के खिलाड़ी का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार रहता है। दर्शक इस शो में अपने पसंदीदा कंटेस्टेंट्स को खतरों का आमना सामना करते देखेंगे। यही नहीं, रोहित का यह शो कलर्स के रियलिटी शो टीआरपी लिस्ट में भी हमेशा टॉप पोजीशन पर रहता है। इस बार इस शो की शूटिंग साउथ अफ्रीका के केपटाउन में हो रही है। इस शो से जुड़े सेलेब्स सोशल मीडिया पर आए दिन अपने अनुभव साझा करते रहते हैं।

शो 'बेकाबू' को कर सकता है रिप्लेस

मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो रोहित शेट्टी का स्टंट बेस्ड रियलिटी शो खतरों के खिलाड़ी-13, 17 जून से टीवी पर प्रसारित होगा। इस शो को दर्शक रात नौ बजे से देख सकेंगे। हालांकि, पहले यह खबर आ रही थी कि यह शो जुलाई से टीवी पर आएगा, लेकिन अब नई रिपोर्ट्स के मुताबिक फैंस को अब ज्यादा इंतजार नहीं करना होगा। बता दें कि अभी तक इस बात की कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है।

खतरों के खिलाड़ी को नए स्लॉट में शिफ्ट किया जाएगा

खबर यह भी आ रही है कि इस शो के आने से शनिवार और रविवार को प्रसारित होने वाले शो बेकाबू को रिप्लेस किया जाएगा। शालीन भनोट के इस शो ने अब तक दर्शकों के बीच अच्छी खासी लोकप्रियता बटोरी है। हालांकि, यह भी कहा जा रहा है कि अगर एकता कपूर के इस शो की टीआरपी अच्छी रही तो शो 'खतरों के खिलाड़ी' को नए स्लॉट में शिफ्ट किया जाएगा। अब इस बात की पुष्टि मेकर्स ही कर सकते हैं।

कार्तिक संग नजर आएंगे भुवन अरोड़ा

बॉलीवुड के शानदार निर्देशकों में शुमार कबीर खान अब अपनी नई फिल्म को लेकर चर्चा में हैं। इस फिल्म में सुपरस्टार कार्तिक आर्यन नजर आएंगे। उनके अलावा एक और एक्टर की एंट्री भी इस फिल्म में हो गई है और वह एक्टर हैं भुवन अरोड़ा।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक भुवन अरोड़ा निर्देशक कबीर खान की अगली फिल्म में कार्तिक आर्यन के साथ स्क्रीन शेयर करते दिखेंगे। प्राइम वीडियो पर रिलीज हुई फर्जी में भुवन अरोड़ा के काम को खूब पसंद किया गया। शाहिद कपूर के साथ स्क्रीन शेयर करने के बाद भुवन अरोड़ा अब कार्तिक के साथ स्क्रीन शेयर करेंगे। कहा जा रहा है कि फर्जी के बाद कबीर खान की नजर भुवन अरोड़ा पर पड़ी। इसी के बाद उन्होंने भुवन को अपनी फिल्म में लेने का मन बनाया। कार्तिक के संग अपनी नई फिल्म को लेकर भुवन की खुशी का ठिकाना नहीं है। उन्होंने इस प्रोजेक्ट को लेकर कहा, मैं कबीर सर के साथ काम करने के लिए बहुत उत्साहित और खुश हूं। मुझे हमेशा उनकी फिल्में बेहद पसंद आई हैं। साथ ही उनके स्टोरी के चयन को लेकर भी मैं हमेशा उनकी तारीफ करता आया हूं।

इसके अलावा भुवन अरोड़ा ने कहा, यह बहुत चुनौतीपूर्ण फिल्म है, जिसके लिए काफी तैयारियां करने की जरूरत है। यह फिल्म एक सच्ची कहानी पर आधारित होगी, जिसमें जिंदगी से भी बड़ा कैनवास देखने को मिलने वाला है। इस फिल्म में मुझे एक नए रोल में देखा जाएगा, जो मैंने पहले कभी नहीं किया है। बता दें कि कबीर खान द्वारा निर्देशित अगली फिल्म को साजिद नाडियाडवाला प्रोड्यूस कर रहे हैं। बात करें कबीर खान की फिल्मों की तो वह बंजरंगी भाईजान, एक था टाइगर और 83 जैसी फिल्मों के लिए जाने जाते हैं।

मंदाना करीमी ने खोले बॉलीवुड के काले राज

प्रियंका चोपड़ा ने हाल ही में बॉलीवुड इंडस्ट्री के कच्चे चिट्ठों का खुलासा किया था। वहीं अब मंदाना करीमी ने बॉलीवुड के राज खोले हैं। रियलिटी शो बिग बॉस की पूर्व प्रतिभागी और क्या कूल हैं हम 3 में सहायक भूमिका निभाने के लिए जानी जाने वाली ईरानी अभिनेत्री मंदाना करीमी ने कहा कि उन्होंने बॉलीवुड छोड़ दिया है, क्योंकि यह उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिए अस्वस्थ था। हाल ही में दिए इंटरव्यू में उन्होंने फिल्म इंडस्ट्री में अपने कड़वे अनुभवों को साझा किया। अभिनेत्री ने कहा कि मुझे प्रसिद्धि की परवाह नहीं है। मुझे उस पैसे की परवाह नहीं है, जो मैं कमाती थी, जब मैं छोटी थी, तब मैं करती थी, लेकिन अब नहीं। अपने करियर के नाजुक पल की बात करते हुए अभिनेत्री ने कहा कि उन्होंने एक निर्देशक पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाने का फैसला किया। अन्य महिलाओं ने भी फिल्म निर्माता के साथ ऐसा ही अनुभव किया था। मंदाना ने कहा कि मीटू आंदोलन ने मेरे लिए अच्छा करने के बजाय मेरे लिए बहुत नुकसान किया।

इंडस्ट्री का हिस्सा बनना मुश्किल

मंदाना ने कहा कि वह बार बार यह सुनकर थक चुकी थीं कि इंडस्ट्री में उनका काम करना मुश्किल है, सिर्फ इसलिए कि वह हर उस बात से सहमत नहीं थीं, जो उन्हें करने के लिए कहा गया था। अक्सर लोग उसे कहते थे कि वह भारतीय संस्कृति को नहीं समझती, जिससे वह और भी नाराज हो गईं। उन्होंने कहा कि यह एक उद्योग है कि अगर मेरे पास अभी एक बच्चा है तो मुझे चिंता होगी कि मेरी बेटी बॉलीवुड का हिस्सा बनना चाहती है। भारत में उद्योग बहुत अलग है। यह इस बात पर चलता है कि आप किसे जानते हैं, आपके पिता कौन हैं, आपका परिवार कौन है। हां, बाद में यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप कितने अच्छे हैं और आप कितने प्रतिभाशाली हैं, लेकिन यह बहुत प्रतिस्पर्धी है। मंदाना ने कहा कि वह खुद को प्रतिस्पर्धी मानती हैं, लेकिन कुछ स्थितियां बेकार हो सकती हैं। मेरे लिए बॉलीवुड ऐसा ही था। मैंने काम करने के लिए अच्छे लोगों को खोजने की कोशिश की।. मैं यह नहीं कह रही कि हर कोई एक जैसा है, कुछ अद्भुत लोग हैं, जिनके साथ मैंने काम किया है। दुर्भाग्य से मेरे करियर में मेरे पास इतने सारे लोग नहीं थे। मेरे पास ऐसे लोग थे, जो बहुत अपमानजनक थे। वे आपके साथ ऐसा व्यवहार करते हैं कि ओह, वह एक सुंदर लड़की है, उसके पास समर्थन नहीं है, हम जो चाहें कर सकते हैं।

मैं अपने एक्टिंग स्किल को आगे बढ़ाना चाहता हूं

एक्टर-डांसर राघव जुयाल का शेड्यूल बेहद बिजी है। वह एक के बाद एक फिल्मों की शूटिंग कर रहे हैं और खुद को बेहतरीन कलाकार के तौर पर साबित कर रहे हैं। सलमान खान स्टारर किसी का भाई किसी का जान के बाद वह एक्सेल एंटरटेनमेंट के साथ फिल्म युद्ध की तैयारी कर रहे हैं। इसके अलावा, वह ऑस्कर पुरस्कार विजेता सिख एंटरटेनमेंट की दो प्रोजेक्ट का भी हिस्सा हैं। इस बारे में बात करते हुए, राघव ने कहा- मैंने फैसला लिया कि मैं अपने एक्टिंग स्किल्स को आगे बढ़ाना चाहता हूं। मैं किसी भी इंडस्ट्री से दूर नहीं गया, लेकिन एक क्राफ्ट पर फोकस करना चाहता हूं। एक्टिंग, जिसे मैं हमेशा से करना चाहता था। उन्होंने आगे कहा- अपने आखिरी टीवी अपीयरेंस के बाद मैंने पॉज लिया। मैं वास्तव में भाग्यशाली हूं कि मुझे अद्भुत फिल्म निर्माताओं और कुछ रोमांचक परियोजनाओं के साथ काम करने का मौका मिला। बैक-टू-बैक पांच फिल्मों के लिए शॉट, काम बहुत अच्छा रहा है, क्योंकि यह वही है जो मैं करना चाहता था और मुझे खुशी है कि यह सब अब शेप ले रहा है।

सोनम बाजवा इस वजह से नहीं करना चाहतीं हिंदी फिल्में

सोनम बाजवा पंजाबी फिल्म इंडस्ट्री की जानी मानी अभिनेत्री हैं। वह अपनी एक्टिंग और लुक्स के जरिए वहां खूब पसंद की जाती हैं। बॉलीवुड की पार्टीज में भी सोनम का जुदा अंदाज देखने को मिल ही जाता है। इस साल जुलाई में अभिनेत्री को 10 साल भी पूरे होने जा रहे हैं। इसके साथ ही वह हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में भी पॉपुलर हो रही हैं। सोनम की फिल्म कैरी ऑन जट्टा 3 रिलीज होने जा रही है। अभिनेत्री इस फिल्म के प्रमोशन में बिजी हैं और एक इंटरव्यू के दौरान उन्होंने अभी तक बॉलीवुड में डेब्यू क्यों नहीं किया इसपर भी बात की। एक इंटरव्यू के दौरान सोनम बाजवा ने बॉलीवुड डेब्यू के बारे में बात की। अभिनेत्री ने कहा कि बोल्ड कंटेट ही मेरे लिए बॉलीवुड में डेब्यू करने में बाधा है। उन्होंने कहा यह मेरे लिए एक बड़ी बाधा रही है। उन्होंने आगे कहा, मेरे माता-पिता ने कभी भी मेरी पसंद पर सवाल नहीं उठाए, बल्कि उन्होंने यह पूछा कि मैंने ऐसे सीन के लिए मना क्यों किया। वह मेरे प्रोफेशन को समझते हैं लेकिन मैं खुद को रोके हुए हूं। सोनम बाजवा ने कहा, मुझे लगता है कि मेरी परवरिश इसी तरह हुई है और मेरी अपने फैंस के प्रति भी जिम्मेदारी है। लेकिन अगर यह स्क्रिप्ट के लिए आवश्यक है और अच्छी तरह से शूट किया गया है, जिसे मैं अपने भाई के साथ भी देख सकती हूं, तो मैं इसके लिए तैयार रहूंगी। मैं सिर्फ लोगों की आंखें सेंकने के लिए या उनको गुदगुदाने के लिए कुछ भी करने में भरोसा नहीं करती हूं। सोनम बाजवा ने बताया, बॉलीवुड में मैंने कुछ चीजों को न कहा है क्योंकि मैं कहती हूं कि अगर ये करूंगी तो क्या पंजाब के दर्शकों को ये सही लगेगा? क्योंकि हमारी मानसिकता ऐसी हो गई है कि परिवारवाले को ये सही लगना चाहिए। परिवारवालों को भी देखना चाहिए। उसके बाद से मैं फिल्मों में किसिंग सीन करने से डरती हूं। क्योंकि मुझे लगता था कि लोग इस पर कैसे रिएक्ट करेंगे। इसलिए तब से मैं फिल्मों में किसिंग सीन करने से डरती हूं। क्योंकि मैं सोचती हूं कि लोग कैसे रिस्पॉन्ड करेंगे।

फिल्म फाइटर में एयरफोर्स पायलट बने नजर आएंगे अक्षय ओबेरॉय
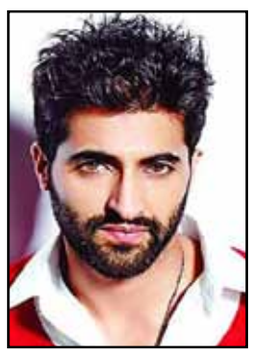
अभिनेता अक्षय ओबेरॉय ने अलग-अलग किस्म के किरदारों से दर्शकों के बीच एक खास पहचान बनाई है। जल्द ही वह द ब्रोकन न्यूज के दूसरे सीजन में श्रिया पिलगांवकर के साथ स्क्रीन शेयर करते दिखेंगे, जो इसके पिछले सीजन में भी नजर आई थीं। अक्षय दीपिका पादुकोण, ऋतिक रोशन, अनिल कपूर और करण सिंह ग्रोवर अभिनीत फिल्म फाइटर में भी नजर आने वाले हैं। बता दें कि फिल्म फाइटर में अक्षय एयरफोर्स पायलट की भूमिका निभा रहे हैं। यह फिल्म 25 जनवरी, 2024 को रिलीज होगी। कहा जा रहा है कि यह फिल्म दुनियाभर में शूट की जाएगी और देश के सशस्त्र बलों के बलिदान को श्रद्धांजलि देगी। अक्षय ओबेरॉय अमेरिकन चाय, पिज्जा, इसी लाइफ में, फितूर, पीकू, और जंगली जैसी फिल्मों में नजर आ चुके हैं।